संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ जनवरी २०१०
वर्ष : १९ अंक : ७
(निरंतर अंक : २०५)

आप अपने चित्त को स्वस्थ रखो। परिस्थितियों के बहाव में अपने को मत बहने दो। ऐसे सावधान रहोगे तो अपने आत्मा का हस्तामलकवत् (हाथ पर रखे आँवले की तरह) अनुभव कर सकोगे।

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता-२००९ पुरस्कार वितरण

बलभद्र यादव (छ.ग.) प्रथम १३ विद्यार्थी पुष्पेन्द्र सिंह (राज.) अशोक कुमार (पंजाब)

इस ज्ञान प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों की संख्या पिछले वर्ष के ४,५५,००० से बढ़कर इस वर्ष १३,०७,६४९ हुई। विस्तृत विवरण हेतु पढ़ें पृष्ठ २३

पूज्य बापूजी के भक्तों द्वारा निकाली गयीं संकीर्तन यात्राएँ

बरपाली (उड़ीसा) कोटा (राज.)

विदिशा (म.प्र.)

माहिम (मुंबई)

कोन नगर (प.बंगाल)

दहिसर (मुंबई)

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ७
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०५)
१ जनवरी २०१० मूल्य : रु. ६-००
माघ-फाल्गुन वि.सं. २०६६

स्वामी : महिला उत्थान ट्रस्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : महिला उत्थान ट्रस्ट, यू-१४, स्वस्तिक प्लाजा, नवरंगपुरा, सरदार पटेल पुतले के पास, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, "सुदर्शन", मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

• इस अंक में... •

'इंटरनेशनल स्पिरिच्युअल ऑर्गनाइजेशन' द्वारा दिल्ली में धरना

चार वर्ष पूर्व यू.के. में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय संगठन 'इंटरनेशनल स्पिरिच्युअल ऑर्गनाइजेशन' (आई.एस.ओ.) की यू.के. के अलावा यू.एस., सिंगापुर, कुवैत, दुबई आदि अनेक देशों के साथ भारत में भी शाखाएँ हैं। आई.एस.ओ. सिर्फ एक धर्म के लिए कार्य नहीं करता बल्कि यह कहीं भी लोगों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा हेतु खड़ा होता रहा है। डेन्मार्क के एक अखबार के द्वारा मोहम्मद पैगम्बर का कार्टून छापे जाने पर आई.एस.ओ. (यू.के.) ने अखबार को लोगों की भावनाओं को आहत करने के लिए माफी माँगने की माँग की थी। परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू एवं उनके आश्रमों पर झूठे, बेबुनियाद एवं अत्यंत घृणित आरोप लगाकर उनके करोड़ों-करोड़ों साधकों-भक्तों की आध्यात्मिक भावनाओं पर लम्बे समय से प्रहार किये जा रहे हैं। पूज्य बापूजी के करोड़ों भक्तों की आहत भावनाओं के रक्षण हेतु आई.एस.ओ. ने १४ दिसम्बर से जंतर-मंतर (दिल्ली) पर धरना शुरू किया तथा राजू चांडक के पूरे मामले की सी.बी.आई. जाँच एवं उसके नार्को टेस्ट की माँग की। साथ ही बापूजी के बारे में झूठी खबरें छापकर जनता को गुमराह करनेवाले 'संदेश' अखबार पर कानूनी कार्यवाही की भी माँग की गयी। इस धरने में कुछ संस्कृतिप्रेमियों ने अनशन भी रखा था।

पूज्य बापूजी के खिलाफ चल रहे अनर्गल कुप्रचार से व्यथित अनेक मान्यवरों ने तथा हजारों की संख्या में अध्यात्म एवं संस्कृतिप्रेमी जनता ने इस आयोजन में भाग लिया।

धरने के चौथे दिन मुंबई के बजरंग दल सुरक्षा-प्रमुख श्री पारस राजपूत ने भी अपने विचार रखे। उन्होंने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'संत आसारामजी बापू के विरुद्ध हो रहे षड्यंत्र का राष्ट्रव्यापी विरोध होना चाहिए एवं इस कार्य के लिए आध्यात्मिक संस्थाओं व बुद्धिजीवियों को आगे आने की जरूरत है।' इस मौके पर 'हिन्दू रक्षक दल' के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी रूपेश्वरानंद ने बापू द्वारा की जा रही समाज-सेवा की सराहना करते हुए कहा कि 'बापू के विरुद्ध किये जा रहे षड्यंत्र से भारतीय संस्कृति को खतरा है।' इस अवसर पर 'विश्व हिन्दू परिषद' के केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य कृष्णगिरि महाराज ने एवं ओरैया (उ.प्र.) के पुष्पेन्द्र कैलाश सहित अनेकों संतों एवं समाजसेवियों ने उपस्थित लोगों को मार्गदर्शन दिया।

धरने के पाँचवें दिन 'मानव रक्षा संघ' के अध्यक्ष अयोध्याप्रसाद त्रिपाठीजी ने अपना समर्थन व्यक्त किया। उन्होंने बापूजी को भारतीय संस्कृति का स्तम्भ बताया और बापूजी पर षड्यंत्र संस्कृति पर षड्यंत्र बताया। धरने के पाँचवें दिन भी वि.हि.प. के केन्द्रीय मार्गदर्शन मंडल के सदस्य कृष्णगिरिजी महाराज ने उपस्थिति दर्शायी।

धरने के छठे दिन 'श्रीराम सेना' के दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष श्री सुनील त्यागीजी ने अपना पूरा समर्थन व्यक्त करते हुए कहा कि इस पूरे घटनाक्रम से वे बेहद आहत हैं।

धरने के सातवें दिन हरिद्वार से आये संत-समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वामी ज्ञानेशानंदजी ने कहा कि 'संतों का अपमान नहीं सहा जायेगा। संत समाजरूपी वृक्ष के मूल हैं और इस मूल को नष्ट करने से समाज भी टिक नहीं

सकता । धरना करना संतों का स्वभाव नहीं है पर बापू पर लगाये जा रहे इल्जामों का विरोध करने हेतु सभी संत जंतर-मंतर पर भी उतर सकते हैं ।'

लगातार दूसरे दिन उपस्थिति दर्शाते हुए आपने यह भी कहा कि 'संदेश जैसे अखबार संतों के खिलाफ अनर्गल बातें छापकर पूरे मीडिया को बदनाम कर रहे हैं ।'

'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के राष्ट्रीय प्रचारक डॉ. सुमन कुमार भी धरने में शामिल हुए । उन्होंने कहा कि 'मैं बापू पर लगाये जा रहे झूठे आरोपों से बहुत मर्माहत हूँ । मैं किसीके बुलाने पर यहाँ नहीं आया हूँ, मेरी अंतरात्मा ने मुझे प्रेरित किया एवं मेरे कर्तृत्व की याद दिलायी इसलिए मैं यहाँ धरने में शामिल हुआ हूँ ।'

धरने के नौवें दिन संत-समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वामी श्री कमलेशानंदजी महाराज ने कहा कि 'पूरा संत-समाज बापू के लिए अपने प्राणों को त्यागने से पीछे नहीं हटेगा ।'

धरने के दसवें दिन हरिद्वार के जूना अखाड़ा के मंडलेश्वर स्वामी श्री केशवानंद गिरिजी अपने अखाड़े के ३५ संतों के साथ जंतर-मंतर पर उतर आये । इसके अलावा देश के अन्य प्रांतों से आये अखाड़ों के प्रतिनिधिमंडल भी बापू के समर्थन में दिल्ली पधारे । हैदराबाद से आये श्री शैलेन्द्रजी ने कहा कि 'संतों को धरने पर उतरना पड़े, इससे बड़ा दुर्भाग्य नहीं हो सकता ।'

रीवा से आयी साध्वी सरस्वती देवी ने उपस्थित लोगों से धर्म की रक्षा के लिए आगे आने का संकल्प कराया ।

धरने के ग्यारहवें दिन हरिद्वार, वृन्दावन, ऋषिकेश, दिल्ली आदि विभिन्न स्थानों से आये संतों ने बड़ी संख्या में धरने में भाग लिया । उन्होंने चेतावनी दी कि पूज्य आसारामजी बापू के विरुद्ध कुप्रचार को बंद नहीं किया गया तो वे सारे विश्व में व्यापक आंदोलन चलायेंगे ।

धरने के तेरहवें दिन पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं म.प्र. की पूर्व मुख्यमंत्री साध्वी उमा भारती धरना-स्थल पर पधारीं एवं उन्होंने बापू पर लगाये गये आरोपों को निराधार बताया । (वक्तव्य पृष्ठ ८ पर)

धरने के चौदहवें दिन प्रतिपक्ष के मुख्य सचेतक विधायक श्री साहिबसिंह चौहान और विधायक श्री मतीन अहमद ने धरना-स्थल पर आकर आश्रम के खिलाफ किये जा रहे षड्यंत्रों की निंदा की । (वक्तव्य पृष्ठ ९ व १० पर)

धरने के पंद्रहवें दिन वि.हि.प., दिल्ली के संयोजक श्री विजय खुराना ने कहा कि 'हिन्दुओं को संगठित होने की जरूरत है । बापू हिन्दुओं के मानबिंदु हैं । उन पर ऐसे आरोप हिन्दुओं की आस्था पर चोट हैं ।'

धरने के सोलहवें दिन वृन्दावन से आये महामंडलेश्वर आचार्य १००८ स्वामी श्री परमात्मानंदजी महाराज ने भूख हड़ताल पर बैठे लोगों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि उनका संकल्प रंग लायेगा । (वक्तव्य पृष्ठ ७ पर)

मुसलिम समुदाय भी धरने के समर्थन में उतरा । रोहिणी मसजिद के इमाम मौलवी हातीफ कासिम ने कहा कि 'बापू पर इल्जाम सभी सूफी फकीरों की तौहीन है और यह इल्जाम नाजायज है ।' 'राष्ट्रीय मुसलिम मंच' के सदस्य मोहम्मद इरफान सलमानी ने कहा कि 'सूफी संत अल्लाह का नूर हैं, बापू ऐसे ही सूफी हैं । ऐसे सूफी के बारे में कोई खराब बोलता है तो हमें तकलीफ होती है । बापू एक रास्ता दिखा रहे हैं और उस पर चलकर बहुत-से परिवार चैन-सुकून से जी रहे हैं ।' (वक्तव्य पृष्ठ ११ पर)

धरने के सत्रहवें दिन मुसलिम समुदाय के साथ सिख समुदाय भी बापूजी के समर्थन में

खुलकर सामने आ गये। श्री गुरुसिंह सभा गुरुद्वारे के प्रधान सरदार श्री सुच्चा सिंहजी ने कहा कि 'हमारे गुरुओं ने हिन्दू संस्कृति की रक्षा में बलिदान दिया है। संतों पर झूठे इल्जाम नहीं सहे जायेंगे और किसी भी झूठे आरोप पर लगाम लगाने के लिए हम उतरेंगे।' जत्थेदार सरदार कृपाल सिंहजी भी धरना-स्थल पर उपस्थित रहे।

वि.हि.प., दिल्ली के संगठन-मंत्री श्री करुण प्रकाशजी एवं महामंत्री श्री सत्येन्द्र मोहनजी भी धरने के समर्थन में उतरे।

धरने के अठारहवें दिन वि.हि.प. के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंघलजी स्वयं पधाकर अनशन एवं धरने का समापन करना चाहते थे परंतु शारीरिक अस्वस्थता के कारण आपने वि.हि.प. के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सिंघलजी को भेजा तथा स्वयं फोन द्वारा भूख हड़ताल एवं धरने पर बैठे सज्जनों को उनकी माँगों के लिए संघर्ष करने का विश्वास दिलाकर उनसे अपना अनशन तोड़ने तथा धरने को समाप्त करने की अपील की। (वक्तव्य पृष्ठ १२ पर)

सिंघलजी के आश्वासन से आश्वस्त होकर एवं आपकी अपील का सम्मान करते हुए दिनांक ३१ दिसम्बर को धरने का समापन किया गया।

इस धरने में हरिद्वार के आचार्य स्वामी श्री अशोकानंदजी महाराज भी अन्न त्यागकर भूख हड़ताल में शामिल हुए थे। अधिकृत रूप से चार तथा अनधिकृत रूप से पंद्रह से अधिक लोगों ने अनशन रखा था। इस धरने में दिल्ली के अलावा राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि विभिन्न राज्यों से आये हजारों लोगों ने भाग लिया (तस्वीरें मुखपृष्ठ ४ पर)। धरना-समापन के अवसर पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्रालय एवं सूचना-प्रसारण मंत्रालय को आई.एस.ओ. के द्वारा ज्ञापन दिया गया। ❐

आप कहते हैं...

श्री कैलाशानंदजी महाराज, हरिद्वार : ''संतों की परम्परा और संतों की प्रतिष्ठा का ख्याल सभीको रखना चाहिए। अभी थोड़े ही दिन पूर्व जगद्गुरु शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज के ऊपर जिस प्रकार की घिनौनी साजिश हुई और पूरा समाज देखता रहा; शासन, प्रशासन, सत्तारूढ़ जितने सारे लोग रहे वे सभी कहीं-न-कहीं मूकदर्शी रहे, आज वही व्यवस्था और वही समस्या आसारामजी बापू के ऊपर आयी है। महाराज श्री आसारामजी हों या कोई भी संस्थानधारी हों, उनको सीधा टारगेट बनाया जाय यह अत्यंत घृणित एवं निंदनीय प्रयास है।''

श्री रमेश भाई ओझा, भागवत प्रवचनकर्ता : ''हमारे शंकराचार्य के लिए भी यही हुआ था। हमारे साधु-संत ऐसी किसी घटना में थोड़े ही लिप्त हो सकते हैं ! वे क्या अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते ! वे कहाँ बैठे हैं, उनका क्या कर्तव्य है यह वे नहीं समझते ! लोगों को जो धर्म समझा रहे हैं, क्या वे अपना धर्म नहीं समझते ! इस प्रकार की प्रवृत्ति कोई महापुरुष कैसे कर सकता है ! प्रश्न ही नहीं उठता।

जिनके मन में कोई-न-कोई स्वार्थ है, चाहे वह धन का हो, चाहे राजनैतिक स्वार्थ हो, चाहे अन्य प्रकार का स्वार्थ हो, वे समाज जाग्रत होकर सत्य की ओर बढ़ जाय यह सह नहीं पाते। इसलिए भी ऐसे लोग संतों के खिलाफ षड्यंत्र करते हैं।''

श्री राजेश्वरजी महाराज, हरिद्वार : ''हिन्दू धर्म, हिन्दू धर्माचार्य, हिन्दू संस्कृति पर जितने भी प्रकार से वे लोग आक्रमण करना चाहते हैं, कर रहे हैं। ये सब विदेशी एजेंसियों के द्वारा और जो विदेशी ताकतें हैं उनके इशारे पर हो रहे हैं। उनकी योजना है कि हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिए उनके धर्माचार्यों को बदनाम करो, हिन्दुओं की मान्यताओं को बदनाम करो। आसारामजी

बापू जैसे अनेक महात्मा हैं जिन पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं। किसी भी महात्मा पर इस प्रकार आरोप लगाना नितान्त ही गलत है और कोई भी आरोप लगाने से पहले तथ्यों की समीक्षा करनी चाहिए, छानबीन करनी चाहिए। शंकराचार्यजी पर जो आरोप लगाये थे वे आज तक सिद्ध नहीं हुए, सब कपोल-कल्पित कहानियाँ थीं। साधुओं के लिए इस तरह की कपोल-कल्पित कहानियाँ बनाना और उनको प्रदर्शित करना, यह राष्ट्र के लिए और समाज के लिए घातक है।''

संत श्री बाबा हरपालसिंहजी महाराज, प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा, मोहाली (पंजाब) : ''पूज्य महान संत बापूजी के ऊपर जो दोष लगाये जा रहे हैं वे निराधार हैं। हमने बापूजी को बहुत नजदीक से देखा है, हमें उनके साथ बहुत प्यार है। और ऐसी रूहानियत के ऊपर, ऐसे महापुरुषों के ऊपर जो दोष लगाते हैं वे बहुत ही निंदनीय हैं। हम इसके लिए सारे पंजाब के जितने भी आश्रमवाले हैं सब इसका विरोध करते हैं।

बापूजी के यहाँ बहुत व्यापक दृष्टि है। यहाँ जो साम्प्रदायिक एकता है, बापूजी का जो प्रचार है, वह सबके लिए है। इसलिए हम पुरजोर अपील करते हैं कि ऐसे महापुरुषों के ऊपर ऐसे दोष न लगाये जायें।

आज सारे सिख लोग, सारी सिख संगत इस बारे में एकजुट है कि बापूजी के लिए जो भी कुर्बानी करनी पड़े, हम उसके लिए तैयार हैं।''

श्री अशोक सिंघलजी, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद : श्री अशोक सिंघलजी ने अहमदाबाद आश्रम को भेंट देकर पुलिस द्वारा साधकों की की गयी मारपीट तथा आश्रम में की गयी तोड़फोड़ व लूटमार का ब्यौरा लिया। उन्हें इस घटना से अत्यंत आघात लगा। व्यथित होकर उन्होंने कहा : ''मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस काम को होने दिया, यह उनका बहुत बड़ा दोष है। इस दोष से वे मुक्त नहीं हो सकते। आपने यह होने कैसे दिया ? आपकी सरकार में हो रहा है !...''

आपने यह भी कहा : ''बापूजी के खिलाफ कुप्रचार खड़ा किया हुआ है। करोड़ों रुपये खर्च करके कुप्रचार करते हैं। इसी प्रकार शंकराचार्यजी को भी बहुत बड़ा अपराधी बना दिया गया था। प्रज्ञा साध्वी पर इल्जाम लगा दिया। यह एक पूरा षड्यंत्र है ईसाइयों का।''

''संतों को लगातार अपमानित किया जा रहा है। शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज, अमृतानंदमयी माँ, सत्य साँईं बाबा, साध्वी प्रज्ञा के बाद अब आसारामजी बापू को आरोपित करके फँसाया जा रहा है। हिन्दू समाज अपने संतों के साथ किये जा रहे ऐसे व्यवहार को सहन नहीं करेगा। बापूजी के भक्तों द्वारा २६ नवम्बर को निकाली गयी रैली पर लाठीचार्ज किया जाना तथा लोगों को गिरफ्तार करना बर्बर कार्यवाही है। २७ नवम्बर को आश्रम पर हमला करके तोड़फोड़ करना एवं २०० से ज्यादा लोगों को बंदी बनाया जाना एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। भारतीय जनता पार्टी हाई कमान को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए। पुलिस को आसारामजी बापू और उनके अनुयायियों का उत्पीड़न बंद करना चाहिए।''

श्री गिरिराज किशोरजी, वरिष्ठ नेता, विश्व हिन्दू परिषद : ''हिन्दू साधु-संतों को बदनाम करने की यह एक साजिश चल रही है। इसके पहले भी शंकराचार्यजी को क्यों गिरफ्तार किया गया ? क्या कारण था ? जिनके समाज में ज्यादा कार्य चलते हैं, जो ज्यादा प्रसिद्ध होते हैं, हमेशा उनका विरोध होता है और सरकारें हमेशा विरोध करती हैं।''

श्री मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : ''गुजरात सरकार एक संतुलित विचार करे और निर्दोषों को कष्ट न होने दे, यह बात हमने सरकार को कही है।'' ❐

संतों के खिलाफ सोची-समझी साजिश

– श्री कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम् महाराज

आज यह जो राजू चांडक नामक शख्स संत आसारामजी बापू पर घिनौने आरोप लगा रहा है वह पूर्व में हमसे भी कई बार मिला था, क्योंकि हमको बहुत-से व्यक्ति मिलते हैं। मुझे उसके क्रियाकलापों से ऐसा लगता है कि वह संत आसारामजी के बहुत ही खिलाफ था और उनके खिलाफ वह तमाम तरह के सबूत इकट्ठा करने की तरह-तरह की बात कर रहा था। यह एक बहुत ही विचारणीय प्रश्न है।

हमारे भारत का जो संविधान है, सर्वोच्च न्यायालय है, वहाँ भी न्याय-प्रक्रिया में एक बात स्पष्ट है कि अगर दस दोषियों को भी छोड़ना पड़े तो छोड़ा जा सकता है लेकिन एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। क्या आरोप लगानेमात्र से व्यक्ति दोषी हो जाता है ? नहीं। उसकी जाँच-प्रक्रिया है। भारत के अंदर संवैधानिक व्यवस्था है। हर आदमी को अपना पक्ष रखने का अधिकार है।

निर्दोष लोगों पर गुजरात की पुलिस ने जिस तरह से बर्बरता दिखायी है, उससे तो ऐसा लगता है कि वहाँ तालिबानी शासन है। वहाँ कानून का राज्य नहीं है। एक बहुत बड़ा सवाल खड़ा हुआ है कि जो सरकार हिन्दू धर्माचार्यों और हिन्दू धर्म का नाम लेकर वहाँ स्थापित हुई है, पूरे देश में एक मैसेज है कि बी.जे.पी. जो है वह संतों का बहुत आदर करती है, संतों के बड़े पक्ष में रहती है लेकिन गुजरात की सरकार ने राम-मंदिर, कृष्ण-मंदिर, कितने-कितने मंदिर वहाँ तोड़े विकास के नाम पर !

हमारा इतिहास साक्षी है कि जब-जब कोई धर्म की बात करता है, सत्य की बात करता है, समाज को सुधारने की बात करता है तो उस पर आरोप हमेशा से लगते आये हैं लेकिन यहाँ बात दूसरी है। इसमें एक संत के ऊपर एक बार एक आरोप लगा, दूसरी बार दूसरा, तीसरी बार तीसरा, फिर किसी दूसरे संत पर आरोप लगता है, फिर किसी तीसरे पर लगता है। यह संतों के खिलाफ बहुत बड़ी सोची-समझी साजिश है, जो हमारे देश में बहुत दिनों से चल रही है। बहुत बड़ी ताकतें हैं जो संतों की छवि धूमिल करना चाहती हैं।

संत कृपालुजी पर एक लड़की द्वारा चारित्रिक आरोप लगाया गया। इस तरह के जो आरोप लगते हैं, उनके पीछे जो बहुत बड़े हाथ होते हैं उन तक पहुँचना जरूरी है।

आज मीडिया के कुछ लोग आसारामजी बापू के विरुद्ध अभद्र भाषा का प्रयोग कर निरंतर मनगढ़ंत समाचार दे रहे हैं, इससे हमारे देश का पूरा संत-समाज दुःखी है।

देखिये, जीसस को क्रॉस पर चढ़ाया गया। उन्होंने कहा था कि 'प्रेम ही ईश्वर है।' मीरा को वेश्या कहा गया। उन्होंने कहा था कि 'मैं भगवान श्रीकृष्ण से प्रेम करती हूँ।' सुकरात व ऋषि दयानंद को जहर दिया गया। संतों के खिलाफ अत्याचार इसलिए होता है कि संत जो सड़ी-गली व्यवस्थाएँ हैं, जो असत्य व अधर्म की बात है उसके खिलाफ सत्य के पक्ष में बात करते हैं और जो सत्य के पक्ष में रहता है उसके खिलाफ षड्यंत्र होते हैं। गुजरात की स्थिति से हमें बहुत आशंका है कि आसारामजी बापू को फँसाने के लिए यह सब षड्यंत्र के तहत हो रहा है।

गुजरात की पुलिस ने संत आसारामजी बापू के आश्रम में जाकर तांडव किया है और निर्दोष लोगों को मारा-पीटा है, उन सब पुलिस अधिकारियों के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज होनी चाहिए। निर्दोष साधक-भक्तों को अपमानित किया जा रहा है, क्या यह अत्याचार नहीं है ? गुजरात की सरकार को हम आगाह करना चाहते हैं कि किसी भी संत पर इस तरह का अत्याचार और उनके आश्रमों पर छापे मारकर **(शेष पृष्ठ ७ पर)**

हिन्दू समाज को कलंकित करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र

– सुश्री उमा भारती, पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

५-६ साल से भारत के मान्यवर साधु-संतों को बदनाम करने की शुरुआत हुई। उसमें पहला नम्बर आया कांची पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी का। इन महापुरुष को बलात्कार और हत्या का आरोपी बना दिया गया व बाद में साजिश की पोल खुलने पर दोनों मामलों से वे बरी भी हो गये, लेकिन इन पाँच सालों में उन पर व उनके अनुयायियों पर क्या गुजरी होगी ! हिन्दू समाज की प्रतिष्ठा को कितना नुकसान हुआ ! अब दूसरा टारगेट आसाराम बापूजी हैं। बापू तो निकलेंगे निर्दोष होकर लेकिन तब तक प्रतिष्ठा का जो नुकसान होगा उसकी भरपाई कर पायेगा कोई ? भगवान के घर से भरपाई होती है तो अपने तरीके से होती है। शंकराचार्य के संदर्भ में भगवान के घर से हुई भरपाई ! गुमराह होकर ऐसे पापकर्म करनेवाली जयललिता ने ऐसी मुँह की खायी कि अब वह कभी उठकर खड़ी नहीं हो सकती भारत की राजनीति में।

मैं मीडिया के सभी बंधुओं को कहूँगी कि आपको अपनी जिम्मेदारी इतनी तो समझनी पड़ेगी कि इन संस्थाओं के साथ लाखों-करोड़ों लोग जुड़े होते हैं। उन लोगों ने इन संस्थाओं से जुड़कर शराब छोड़ी, दुराचरण छोड़े और उनकी जिंदगी बदल गयी। वे बापू के साथ जुड़ गये तो मानवता की सेवा में लग गये, अच्छे कामों में लग गये, उन्होंने बीड़ी-सिगरेट तक छोड़ दिया। जब इन लोगों की श्रद्धा पर आप कुप्रचार द्वारा प्रहार करेंगे तो वे फिर से बुराई के रास्ते पर जायेंगे।

मुझे बहुत दुःख हुआ कि बापू के बारे में ऐसी बातें हुईं। वे भी वहाँ से उद्भूत हुईं जहाँ पर हमारी विचारधारावाली सरकार हो। जिनका काम है कि वे साधु-संतों की रक्षा करें, अगर वे ही साधु-संतों पर कुठाराघात करेंगे तो फिर तो अधर्म और पाप का इतना बोलबाला होगा कि फिर वह रोके नहीं रुकेगा। साधक महिलाओं, बालकों, बुजुर्गों के साथ कितनी मारपीट हुई है ! यह ठीक नहीं है। साधु-संत ही हैं जो अच्छाई को फूँक-फूँककर सुलगाये हुए हैं, जिंदा रख रहे हैं और हम इन्हींकी साँस बंद करने का प्रयास करें तो इससे बड़ा पाप हमारे लिए और क्या हो सकता है ! हम हिन्दू हितों की रक्षा की बात करते हैं और अगर हिन्दू हितों की रक्षा करनेवाली पार्टी के ऊपर ये आरोप लग जायें तो फिर हिन्दू समाज किसके दरवाजे पर जायेगा ? मैं आडवाणीजी को मिली थी और वे स्वयं गांधीनगर से सांसद भी हैं। मैंने उनको कहा था कि कुछ तथ्यों पर आप गौर करिये। बिना इन पर गौर किये हम एक हवा में बह जायें और जो अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र चल रहा है हिन्दू समाज को पथभ्रष्ट कर देने का, हम ही गलती से उस षड्यंत्र में भागीदार हो जायें, यह अच्छा नहीं है। इन तथ्यों पर नरेन्द्र मोदी भी गौर करें और बी.जे.पी. के नेता भी -

पहला : अगर बापू के आश्रम में से किसीने गुरुकुल के बच्चों की हत्या की होती तो क्या उनके शव आश्रम के पीछे फेंक देते ?

दूसरा : राजू जिसने स्वयं अपने गुनाह कबूल कर लिये हैं, उसका जीना तो सच को अदालत में साबित करने के लिए जरूरी है तो उसे मरवाने की कोशिश आश्रम क्यों करेगा ?

तीसरा : जमीनों की जहाँ तक बात है, ये जमीनें संस्था को या तो भेंट में प्राप्त हुई हैं अथवा तो खरीदी हुई हैं, जिनके खरीदी के दस्तावेज मौजूद हैं। वे तो आप देखिये !

चौथा : क्या बापू ने यह कहा है कि ''मैं नरेन्द्र मोदी की सत्ता मिटा दूँगा।'' बापू ने ऐसा कभी नहीं कहा बल्कि चैनलवाले ही बापू के सिर्फ चित्र दिखाकर साथ-साथ खुद बढ़ा-चढ़ाकर शब्द डाल रहे हैं। एंकर और रिपोर्टर जो बोल रहा है उसका कोई मतलब नहीं होता है। मैं मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री थी तब बापू के आश्रम में रुकी हूँ **(शेष पृष्ठ २५ पर)**

हिन्दू समाज को कलंकित करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र

– सुश्री उमा भारती, पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

५-६ साल से भारत के मान्यवर साधु-संतों को बदनाम करने की शुरुआत हुई । उसमें पहला नम्बर आया कांची पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी का । इन महापुरुष को बलात्कार और हत्या का आरोपी बना दिया गया व बाद में साजिश की पोल खुलने पर दोनों मामलों से वे बरी भी हो गये, लेकिन इन पाँच सालों में उन पर व उनके अनुयायियों पर क्या गुजरी होगी ! हिन्दू समाज की प्रतिष्ठा को कितना नुकसान हुआ ! अब दूसरा टारगेट आसाराम बापूजी हैं । बापू तो निकलेंगे निर्दोष होकर लेकिन तब तक प्रतिष्ठा का जो नुकसान होगा उसकी भरपाई कर पायेगा कोई ? भगवान के घर से भरपाई होती है तो अपने तरीके से होती है । शंकराचार्य के संदर्भ में भगवान के घर से हुई भरपाई ! गुमराह होकर ऐसे पापकर्म करनेवाली जयललिता ने ऐसी मुँह की खायी कि अब वह कभी उठकर खड़ी नहीं हो सकती भारत की राजनीति में ।

मैं मीडिया के सभी बंधुओं को कहूँगी कि आपको अपनी जिम्मेदारी इतनी तो समझनी पड़ेगी कि इन संस्थाओं के साथ लाखों-करोड़ों लोग जुड़े होते हैं । उन लोगों ने इन संस्थाओं से जुड़कर शराब छोड़ी, दुराचरण छोड़े और उनकी जिंदगी बदल गयी । वे बापू के साथ जुड़ गये तो मानवता की सेवा में लग गये, अच्छे कामों में लग गये, उन्होंने बीड़ी-सिगरेट तक छोड़ दिया । जब इन लोगों की श्रद्धा पर आप कुप्रचार द्वारा प्रहार करेंगे तो वे फिर से बुराई के रास्ते पर जायेंगे ।

मुझे बहुत दुःख हुआ कि बापू के बारे में ऐसी बातें हुईं । वे भी वहाँ से उद्भूत हुईं जहाँ पर हमारी विचारधारावाली सरकार हो । जिनका काम है कि वे साधु-संतों की रक्षा करें, अगर वे ही साधु-संतों पर कुठाराघात करेंगे तो फिर तो अधर्म और पाप का इतना बोलबाला होगा कि फिर वह रोके नहीं रुकेगा । साधक महिलाओं, बालकों, बुजुर्गों के साथ कितनी मारपीट हुई है ! यह ठीक नहीं है । साधु-संत ही हैं जो अच्छाई को फूँक-फूँककर सुलगाये हुए हैं, जिंदा रख रहे हैं और हम इन्हींकी साँस बंद करने का प्रयास करें तो इससे बड़ा पाप हमारे लिए और क्या हो सकता है ! हम हिन्दू हितों की रक्षा की बात करते हैं और अगर हिन्दू हितों की रक्षा करनेवाली पार्टी के ऊपर ये आरोप लग जायें तो फिर हिन्दू समाज किसके दरवाजे पर जायेगा ? मैं आडवाणीजी को मिली थी और वे स्वयं गांधीनगर से सांसद भी हैं । मैंने उनको कहा था कि कुछ तथ्यों पर आप गौर करिये । बिना इन पर गौर किये हम एक हवा में बह जायें और जो अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र चल रहा है हिन्दू समाज को पथभ्रष्ट कर देने का, हम ही गलती से उस षड्यंत्र में भागीदार हो जायें, यह अच्छा नहीं है । इन तथ्यों पर नरेन्द्र मोदी भी गौर करें और बी.जे.पी. के नेता भी -

पहला : अगर बापू के आश्रम में से किसीने गुरुकुल के बच्चों की हत्या की होती तो क्या उनके शव आश्रम के पीछे फेंक देते ?

दूसरा : राजू जिसने स्वयं अपने गुनाह कबूल कर लिये हैं, उसका जीना तो सच को अदालत में साबित करने के लिए जरूरी है तो उसे मरवाने की कोशिश आश्रम क्यों करेगा ?

तीसरा : जमीनों की जहाँ तक बात है, ये जमीनें संस्था को या तो भेंट में प्राप्त हुई हैं अथवा तो खरीदी हुई हैं, जिनके खरीदी के दस्तावेज मौजूद हैं । वे तो आप देखिये !

चौथा : क्या बापू ने यह कहा है कि ''मैं नरेन्द्र मोदी की सत्ता मिटा दूँगा ।'' बापू ने ऐसा कभी नहीं कहा बल्कि चैनलवाले ही बापू के सिर्फ चित्र दिखाकर साथ-साथ खुद बढ़ा-चढ़ाकर शब्द डाल रहे हैं । एंकर और रिपोर्टर जो बोल रहा है उसका कोई मतलब नहीं होता है । मैं मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री थी तब बापू के आश्रम में रुकी हूँ **(शेष पृष्ठ २५ पर)**

बापू के विरुद्ध झूठी एफ.आई.आर. लिखानेवाले के खिलाफ मुकदमा दर्ज हो

साहिबसिंह चौहान, विधायक, प्रतिपक्ष के मुख्य सचेतक, दिल्ली :

पिछले लम्बे समय से बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र चल रहा है । बापूजी को कोई साधारण मानव मानने की भूल न कर ले । वे एक ऐसे महामानव हैं जिन्होंने कभी अपनी और अपने परिवार की चिंता नहीं की । उनकी अनुभूति है : **वसुधैव कुटुम्बकम्...** सारी दुनिया मेरा परिवार है । जिनके मन में केवल यह है कि चींटी से लेकर हाथी तक हर जीव में केवल और केवल परमात्मा का वास है, जो यह देखते हैं कि प्राणिमात्र में, जीवमात्र में परमात्मा उपस्थित है, कैसे माना जा सकता है कि वे किसीके मन को भी दुखा सकते हैं ! उनके विरुद्ध दर्ज की गयी एफ.आई.आर. झूठी है ।

मैं यहाँ से, भारत की राजधानी से सरकार को भी आगाह करना चाहता हूँ कि जिस प्रकार का मनमाना कानून का नंगानाच वहाँ (गुजरात में) हो रहा है, वह तत्काल बंद होना चाहिए । साधु-संतों पर लाठी बरसाना, उनके केश खींचना, उनको दौड़ा-दौड़ाकर मारना यह केवल साधुओं का अपमान नहीं, हिन्दुस्तान के हर व्यक्ति का अपमान है ।

जो सदा आदिवासियों-गरीबों के कल्याण में रत रहते हों, जो छोटे-छोटे बच्चों को संस्कार देने के लिए हजारों बाल संस्कार केन्द्र खुलवाते हों, जिनके द्वारा माताओं-बहनों को संस्कार और मर्यादाओं की शिक्षा दी जाती हो, जिनकी प्रेरणा से अपराधियों तक के बीच में जाकर भी मानवता का संदेश दिया जाता हो उन संत श्री आसारामजी बापू के प्रति घिनौनी चालें चलना हम सबके लिए एक चुनौती है । ये चालें केवल बापूजी के प्रति नहीं हैं, इसे तमाम संतों के प्रति समझना चाहिए । हिन्दुस्तान में तो इनका जैसे रिवाज हो गया है !

मैं माँग करता हूँ कि बापू के खिलाफ दर्ज एफ.आई.आर. की जाँच सी.बी.आई. के द्वारा हो और जिसने झूठी एफ.आई.आर. लिखायी है उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज हो, उसे जेल के सीकचों के पीछे फेंका जाय । हम कानून का सम्मान करते हैं लेकिन मैं गुजरात के उस छुटभैये अखबार को भी कहना चाहता हूँ कि किसी लालच में एक भ्रमित स्थिति को पैदा करने के लिए, मन में कुछ उद्देश्य-विशेष रखकर आप जो अखबार में छाप देते हैं, वह भी कानून से ऊपर नहीं है । उसके खिलाफ भी मुकदमा दर्ज होना चाहिए, यह मेरी माँग है । कोई भी संत, कोई भी साधु ऐसे किसी अखबार के मोहताज नहीं हैं । निराधार, भड़कानेवाले, लोगों को भ्रमित करनेवाले, धार्मिक उन्माद फैलानेवाले किसी प्रकार के किसी भी समाचार को छापना कानूनी अपराध है । संतों के बारे में कहने से पहले हजार बार सोचना चाहिए ।

पूज्य आसाराम बापूजी का तो आभामण्डल ऐसा है कि हर भक्त जब याद करता है तो ये उसके मन में होते हैं । ऐसे ये साधु-संत मेरे राष्ट्र की धरोहर हैं, त्याग की प्रतिमूर्ति हैं । इनका तप, इनकी सोच मानव-कल्याण के लिए होती है ।

मुझे पता है एक छुटभैये अखबार ने कैसा घृणित समाचार छाप दिया है और मुझे यह भी जानकारी है कि स्टिंग ऑपरेशन में उसकी जो काली कलई खुली है, जो सच सामने आया है,

उस सच को भी नहीं झुठलाया जा सकता। लेकिन कई बार दुःख होता है भाइयो ! कुल्हाड़ी में जब तक लकड़ी का हाथा न हो तब तक पेड़ नहीं कटता और हमारे देश में यही होता रहा है, हम बँट के रहे हैं । देर हो जाती है साधु-संतों को पहचानने में । हम तनिक-से लालच के पीछे किसी-न-किसी कुचक्र में फँसकर उस प्रकार का कदम उठा बैठते हैं । इसमें से कुंदन होकर... नहीं-नहीं, साक्षात् कुंदन ही हैं, साक्षात् ईश्वर ही हैं आसारामजी बापू और उनके सभी भक्तजन !

गुजरात में जिस प्रकार का षड्यंत्र चल रहा है, जिस प्रकार उस छुटभैये अखबार को हथियार बनाकर आसाराम बापूजी के प्रति षड्यंत्र रचा जा रहा है, कुचक्र चलाया जा रहा है, क्या यह सब सरकार के सामने नहीं है ? उस अखबार के खिलाफ अब तक मुकदमा दर्ज करके उसे बंद कर देना चाहिए था ।

स्टिंग ऑपरेशन की सी.डी. में आश्रम के खिलाफ षड्यंत्र करनेवाले जो साजिशकर्ता बेपर्दा हुए हैं तथा जो उनसे जुड़े हैं, उनकी भी जाँच की जानी चाहिए, उनका पर्दाफाश होना चाहिए कि किस तरह से उन लोगों ने षड्यंत्र किया है ।

चौधरी मतीन अहमद, विधायक :

बापू आसारामजी के बारे में जो अफवाहें फैलायी जा रही हैं, झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं, अगर संतों के साथ भी यह होगा तो फिर दूसरों का क्या हाल होगा ! और संत अपने लिए नहीं जीते, दूसरों के लिए जीते हैं । कुछ लोग कहते हैं कि बापू आसारामजी और दूसरे संतों ने इतने आश्रम बना लिये ! तो आश्रमों में रहता कौन है ? आश्रमों में खाता कौन है ? आश्रमों का फायदा कौन उठाता है ? बापू थोड़े ही उठाते हैं ! देश के लोग उठाते हैं, भक्त उठाते हैं, वे रहते हैं, वे खाते हैं, वे सोते हैं, वे शिक्षा लेते हैं । गौशाला अगर चल रही है तो गौशाला में कौन रहते हैं ? गौएँ रहती हैं और जो शिक्षण संस्थान चल रहे हैं उनमें कौन पढ़ता है ? बापू आसारामजी के परिवार के लोग थोड़े ही पढ़ते हैं, दूसरे लोग पढ़ते हैं । पूरे देश में उनके करोड़ों चाहनेवाले हैं, माननेवाले हैं । बापू सबको अच्छी बातें बताते हैं, अच्छा संदेश देते हैं जिससे लोगों को शांति मिलती है और उनके साथ इस तरह का अन्याय किया जाय तो मैं तो कहता हूँ उसकी जितनी भर्त्सना की जाय उतनी कम है !

हम इसका पुरजोर विरोध करते हैं और माँग करते हैं कि इस तरह के जो भी झूठे मामले बापू पर लगाये जा रहे हैं, उनको तुरंत रोका जाय और उसकी सी.बी.आई. जाँच करवायी जाय, जिससे दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जाय । और इससे गलत संदेश भी जा रहा है । बापू जैसे महान तपस्वी, त्यागी संत, जिनमें करोड़ों लोगों का श्रद्धा-विश्वास है, उन पर भी इस तरह के लांछन लगेंगे, इस तरह के आरोप लगेंगे और मुकदमे दर्ज होंगे और जेल जाने की बातें होंगी तो फिर कोई भी आदमी अपने को सुरक्षित महसूस नहीं करेगा और न्याय-व्यवस्था से हमारा विश्वास उठ जायेगा ।

मैं तो केन्द्र सरकार से, गुजरात की सरकार से माँग करता हूँ कि आप अपना काम कर रहे हैं, करते रहिये, राजनीति आप कर रहे हैं करते रहिये, आप एम.एल.ए., एम.पी., मुख्यमंत्री, मंत्री बनते रहिये लेकिन जो समाज के लिए अच्छा काम कर रहे हैं, समाज के लोग उन्हें पसंद करते हैं, उन पर विश्वास रखते हैं तो उनको मुझे लगता है छेड़ने की जरूरत नहीं, बल्कि उनका आदर-सम्मान होना चाहिए ।

इस पूरे मामले में हम पूरी तरह बापूजी के साथ हैं । जहाँ भी आपको हमारी जरूरत लगे, हम आपके साथ खड़े मिलेंगे । ❐

बापू जैसे सूफी संत अल्लाह का नूर हैं

मोहम्मद इरफान सलमानी, सदस्य, राष्ट्रीय मुसलिम मंच :

सूफी संत, महात्मा जो हैं सारे हमारे बुजुर्ग हैं। इनसे हमें सीखने को मिलता है, ये हमारे मार्गदर्शक हैं। अगर इनके बारे में कोई अखबार हलकी धारणाएँ रखता है, कोई कुछ लिख देता है या कोई छाप देता है तो यह गलत बात है ही। जैसे हमारे पिता हैं, हम अपने पिता के बारे में घिसा-पिटा नहीं सुन सकते हैं तो गुरु तो हमारे पिता के भी पिता होते हैं।

सूफी संत अल्लाह का नूर हैं, बापू ऐसे ही सूफी हैं। ऐसे सूफी के बारे में कोई खराब बोलता है तो हमें तकलीफ होती है।

बापूजी के बारे में तो शायद बच्चा-बच्चा जानता है। बापूजी के आश्रम में लोगों की आँखें खुलती हैं। जहाँ तक मैं अपने समाज के बारे में जानता हूँ, मेरे से ज्यादा बापूजी मेरे समाज के बारे में जानते हैं। मैं उनको चैनल पर देखता हूँ और कई प्रोग्राम उनके अटेंड भी करे हैं मैंने। तो उनके सत्संग में आने के बाद दिल के अंदर एक नयी-सी खुशी जागती है। बापूजी ने कभी किसीका बुरा तो करा नहीं है सिवाय अच्छा के। वे यही चाहते हैं कि हर परिवार सुखी रहे, परिवार में शांति रहे और वे यही रास्ता दिखाते हैं। तो यही इन कुछ लोगों को पसंद नहीं है।

बापूजी के बारे में ये जो अपशब्द कहे जा रहे हैं, ये जो विकल्प दिये जा रहे हैं ये सब झूठे हैं। मैंने कई परिवार देखे हैं जो बापूजी के प्रवचनों से सुख-शांति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं - उनकी सिर्फ एक वाणी से। वे एक बार जो बात बोल देते हैं उसे पूरा परिवार एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेता है और सही रास्ते पर चलने लगता है। यह इन लोगों (कुप्रचारकों) को पसंद नहीं। बापू कहते हैं नशा मत करो। नशा बेचनेवालों को बुरा लगेगा। बापू कहते हैं बुरी आदतें छोड़ दो। बुरी आदतें सिखानेवालों को बुरा लगेगा। तो बापू सिर्फ सीधा रास्ता दिखाते हैं, अक्सर लोग मिलते हैं टेढ़े रास्ते दिखानेवाले। ऐसे लोग ही बापू का कुप्रचार कर रहे हैं।

> **“मैंने कई परिवार देखे हैं जो बापूजी के प्रवचनों से सुख-शांति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं - उनकी सिर्फ एक वाणी से। वे एक बार जो बात बोल देते हैं उसे पूरा परिवार एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेता है और सही रास्ते पर चलने लगता है। यह इन लोगों (कुप्रचारकों) को पसंद नहीं है।”**

मौलवी हातीफ कासिम, रोहिणी-दिल्ली मसजिद के इमाम : सूफी संत का काम है सिर्फ सच्चाई दिखाना, अच्छा रास्ता बताना। इसलिए हमारे सूफी बापू आसारामजी भी हैं। उनको कोई समझनेवाला चाहिए। उनके अंदर की भावना जो नहीं समझेगा वह उनको क्या समझेगा ! अरे, वह तो बहुत बदनसीब है इन्सान, जिसने बापू के लिए अनर्गल छापा है। अगर सच्चाई पता चलती तो कदमों पर गिर जाता वह ! उसकी किस्मत में ही नहीं है उनके कदमों पर गिरना, पहुँच क्या जायेगा ! उसने जो भी किया है बहुत ही बुरा किया है। 'संदेश' अखबार को बंद कर दिया जाय, बरखास्त कर दिया जाय।

बापू पर इल्जाम सभी सूफी फकीरों की तौहीन है औरं यह इल्जाम नाजायज है। ❒

संत हमारे लिए ईश्वर के समान हैं, उनका अपमान नहीं सहेंगे

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंघलजी का धरना-स्थल पर वक्तव्य (फोन द्वारा) :

सच बात यह है कि संत आसारामजी बापू के विरुद्ध जो अभियोग लगाये गये हैं, वे बिना जाँच के लगाये गये हैं। बिना जाँच के इस प्रकार का कोई अभियोग चलाना उचित नहीं है। शंकराचार्यजी के ऊपर इसी प्रकार का अभियोग उनके कर्मचारी के विषय में लगाया गया था और उनको जेल के अंदर डाला गया। इससे बढ़कर इस भारत का अपमान नहीं हो सकता। इस अपमान को हम कैसे सहन कर सकते हैं ! संत हमारे लिए ईश्वर के समान हैं। हमने ईश्वर को देखा नहीं है, मगर संतों के प्रवचन होते हैं, उनके द्वारा जो उद्‌गार प्रकट होते हैं उससे भगवान हमारे ध्यान में आते हैं।

संत आसारामजी बापू के विरुद्ध जो अभियोग लगाया गया है कि इन्होंने मारने का कोई षड्‌यंत्र किया है यह सही नहीं है, इसकी जाँच करनी चाहिए और उनके ऊपर से यह अभियोग हटा देना चाहिए। मैं इसके लिए खुद लगा हुआ हूँ।

मैंने यह भी कहा था कि बापू के आश्रम की तोड़फोड़ की जा रही है, इसको न किया जाय। जिस प्रकार से आश्रमवासियों के ऊपर लाठियाँ बरसायी गयी हैं, यह उचित नहीं था।

जो भी लोग ('इंटरनेशनल स्पिरिच्युअल ऑर्गनाइजेशन' द्वारा चलाये गये) इस धरने पर बैठे हैं, उनका मैं बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ कि उन्होंने इतने दिन से यह धरना चलाया है और इस धरने का निश्चितरूप से परिणाम होगा। देश के किसी भी संत का किसी प्रकार का अपमान होता है तो बहुत बड़ी गूँज उठती है। मैं आप सबसे और विशेषरूप से उनसे प्रार्थना करता हूँ जिन्होंने अनशन किया हुआ है, वे उसे वापस लें। जो अनशन कर रहे हैं, मैं तो स्वयं पहुँचकर उनके अनशन को तुड़वाता, मगर मेरा अस्वास्थ्य देखते हुए मुझे यहाँ प्रयाग में आना पड़ा है तो वहाँ पहुँच नहीं सकता। मैं आप सबका पुनः अभिनंदन करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि यह धरना समाप्त करें।

श्री ओमप्रकाश सिंघलजी, अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद :

पूज्य संत इस देश को जगाने के लिए, इस देश की अस्मिता को जगाने के लिए आते हैं। देश में संतों का अपमान नहीं सहा जायेगा और इस देश में जब तक 'विश्व हिन्दू परिषद' का एक-एक कार्यकर्ता मौजूद है, बलिदान देने की बात आयेगी तो बहुत बड़ी शृंखला है 'विश्व हिन्दू परिषद' और 'बजरंग दल' के कार्यकर्ताओं की।

हम लोग सरकार से अपील करते हैं कि आसारामजी बापू के ऊपर जो भी झूठे केस दाखिल किये गये हैं, वे केस अविलम्ब वापस ले लिये जायें। ❑

हम निंदकों से विचलित नहीं होंगे

लातूर, २२ दिसम्बर : संत श्री आसारामजी बापू के बारे में किये जा रहे कुप्रचार के बारे में बोलते हुए 'आर्ट ऑफ लिविंग' के श्री रविशंकरजी ने कहा : ''धर्म-रक्षण एवं मानव-कल्याणार्थ ईश्वरीय कार्य में लगा हुआ हमारा संत-समाज संतों के खिलाफ प्रचारित इस प्रकार की उलटी-सीधी चर्चाओं को महत्त्व नहीं देगा तथा संत-निंदकों से विचलित नहीं होगा।''

संतों-महात्माओं की निंदा करनेवालों को रविशंकरजी ने फटकारा।

('पुण्यनगरी' समाचार पत्र, औरंगाबाद)

श्रद्धा की सुरक्षा

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक बार कुम्हार के निभाड़े में आग लगायी गयी और किसीसे पता चला कि उसके अंदर बिल्ली के बच्चे हैं । तब भगवान की आर्तभाव से प्रार्थना की गयी । आग शांत होने पर निभाड़े से बिल्ली के बच्चे जीवित निकले । प्रह्लाद ने यह प्रसंग देखा और उसका हृदय भगवान के प्रति प्रेम और भाव से भर गया । प्रह्लाद के चित्त में सत्संग के संस्कार सुषुप्त पड़े थे, वे जग गये और लगा कि सार वही (परमात्मा) है । संसार से वैराग्य हो गया और भजन में मन लग गया । प्रह्लाद भगवान के रास्ते चल पड़ा तो घोर विरोध हुआ । एक असुर बालक विष्णुजी की भक्ति करे, देवों का शत्रु हिरण्यकशिपु यह कैसे सह सकता था ! फिर भी प्रह्लाद दृढ़ता से भजन करता रहा । पिता ने उसे डाँटा, फटकारा, जल्लादों से डराया, पर्वतों से गिरवाया, सागर में फिकवाया लेकिन प्रह्लाद की श्रद्धा नहीं टूटी । हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को मारने के लिए कई प्रयास किये ।

प्रह्लाद ने सोचा, 'हरि ने बिल्ली के बच्चों को बचाया तो क्या मैं उसका बच्चा नहीं हूँ ? वह मुझे भी बचायेगा ।' प्रह्लाद भगवान की शरण हो गया । पिता ने पर्वतों से गिरवाया तो मरा नहीं, सागर में फिकवाया तो डूबा नहीं । आखिर लोहे के स्तम्भ को तपवाकर पिता बोला : ''तू कहता है कि मेरा भगवान सर्वत्र है, सर्वसमर्थ है । अगर ऐसा है तो वह इस स्तम्भ में भी है, तू इसका आलिंगन कर । वह सर्वसमर्थ है तो यहाँ भी प्रकट हो सकता है ।''

प्रह्लाद ने तीव्र भावना करके लोहे के तपे हुए स्तम्भ को आलिंगन किया ,तो वहाँ भगवान का नृसिंहावतार प्रकट हुआ । **जब भोगों का बाहुल्य हो जाता है, जब दुष्टों के जोर-जुल्म बढ़ जाते हैं तब भगवान चाहे कहीं से, किसी भी रूप में प्रकट होने में समर्थ हैं ।** भगवान नृसिंह के रूप में प्रकट हुए । हिरण्यकशिपु का वध करके उसे स्वधाम पहुँचाया, प्रह्लाद को राज्य दिया और अंतर्धान हो गये । प्रह्लाद ने भगवान के दर्शन तो किये लेकिन भगवत्-तत्त्व का साक्षात्कार अभी नहीं हुआ था । भगवान का तात्त्विक स्वरूप जानना उनके दर्शन से भी आगे की बात है ।

कुछ समय बीता । असुरों के आचार्य ने प्रह्लाद को भरमाया । बोले : ''प्रह्लाद ! विष्णु ने तुम्हारे पिता को मार डाला । तुमने उनकी शरण माँगी थी, रक्षण की प्रार्थना की थी लेकिन क्या ऐसा कहा था कि मेरे पिता को मार डालो ?''

''नहीं, मैंने पिता को मारने को तो नहीं कहा था ।''

''तुमने कहा नहीं, फिर क्यों मारा ? तुम पर विष्णु की प्रीति थी तो पिता की बुद्धि सुधार देते । उनकी हत्या क्यों की ?''

विष्णु भगवान में प्रह्लाद की श्रद्धा तो थी लेकिन श्रद्धा को हिलानेवाले लोगों का संग मिल जाय और भक्त थोड़ा असावधान रहे तो श्रद्धा कभी हिलने भी लगती है । ऐसे श्रद्धा हिलानेवाले कई लोग साधक के जीवन में भी आते रहते हैं । ईश्वर में, सद्गुरु में, सत्संग में, साधना में, गुरुमंत्र में से श्रद्धा हिलानेवाला कोई-न-कोई तो मिल ही जायेगा । बाहर से कोई नहीं मिलेगा तो हमारा मन ही तर्क-वितर्क करके विरोध करेगा, श्रद्धा को हिलायेगा । इसलिए श्रद्धा की दृढ़ता बनाये

रखने के लिए हलके संग व मन की चालबाजी से सावधान रहना चाहिए ।

असुरगुरु शुक्राचार्य ने प्रह्लाद की श्रद्धा को हिला दिया । शुक्राचार्य प्रह्लाद को कहते हैं : ''विष्णु ने तुम्हारे बाप को मार डाला, फिर भी तुम उनको पूजते हो ! कैसे मूर्ख हो ! इतनी अंधश्रद्धा !''

किसी श्रद्धालु को कोई बोले कि 'ऐसी तुम्हारी अंधश्रद्धा !' तो वह बचाव तो करेगा कि मेरी अंधश्रद्धा नहीं है सच्ची श्रद्धा है लेकिन विरोधी का कथन उसकी श्रद्धा को झकझोर देगा । शब्द देर-सवेर चित्त पर असर करते ही हैं, इसीलिए भगवान शंकर ने रक्षा का कवच बताया कि 'गुरु की निंदा करनेवाले को अपने स्थान से भगा दें अथवा स्वयं उस स्थान का त्याग करें ।'

शुक्राचार्य ने प्रह्लाद में भगवान विष्णु के प्रति वैरभाव के संस्कार भर दिये । प्रह्लाद आ गया उनके प्रभाव में । कहने लगा : ''आप कहो तो विष्णु से बदला लूँ ।''

भगवान विष्णु का विरोध करता हुआ प्रह्लाद सेना को सुसज्ज करके आदिनारायण का आह्वान कर रहा है : ''आ जाओ, तुम्हारी खबर लेंगे ।''

भगवान भक्त का अहंकार और पतन नहीं सह सकते । दयालु श्रीहरि ने बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण किया । कृश काया, झुकी कमर, हाथ में लकड़ी तथा श्वेत वस्त्रादि से युक्त ब्राह्मण के रूप में प्रह्लाद के राजदरबार में जाने लगे । द्वार पर पहुँचे तो दरबान ने कहा : ''हे ब्राह्मण ! प्रह्लाद युद्ध की तैयारी में हैं । युद्ध के समय साधु-ब्राह्मण का दर्शन ठीक नहीं माना जाता ।''

ब्राह्मण वेशधारी प्रभु ने कहा : ''मैंने सुना है कि प्रह्लाद साधु-ब्राह्मणों का खूब आदर करते हैं और तू मुझे जाने से रोक रहा है !''

दरबान : ''अब प्रह्लाद पहले जैसे नहीं हैं, सावधान हो गये हैं । शुक्राचार्य ने उनको समझा दिया है । अब तो वे भगवान विष्णु से बदला लेने की तैयारी में हैं । वे अब साधु-ब्राह्मणों का आदर करनेवाले नहीं रहे । हे ब्राह्मण ! तुम चले जाओ ।''

''भाई ! कुछ भी हो, मैं अब प्रह्लाद से मिलकर ही जाऊँगा । तू जाने नहीं देगा तो मैं यहीं प्राण त्याग दूँगा । तुमको ब्रह्महत्या का पाप लगेगा ।''

द्वारपाल को समझा-बुझाकर भगवान प्रह्लाद के समक्ष पहुँचे । अभिवादन करते हुए ब्राह्मण वेशधारी प्रभु ने कहा : ''प्रह्लाद ! तेरा कल्याण हो । सुना है अपने पितृहन्ता विष्णु से तुम बदला लेना चाहते हो । तुम मेरी ओर से भी बदला लेना । मुझ बूढ़े ब्राह्मण का भी सर्वनाश हो गया ।''

ब्राह्मण वेशधारी भगवान ने विष्णु-विरोधी कुछ बातें कहीं । प्रह्लाद ने उनको नजदीक बिठाया । बातों का सिलसिला चला ।

ब्राह्मण ने पूछा : ''तुम विष्णु से बदला लेना चाहते हो लेकिन विष्णु कहाँ रहते हैं ?''

''वे तो सर्वत्र हैं । सर्व हृदयों में बैठे हैं ।''

''हे मूर्ख प्रह्लाद ! जो सर्वत्र है, सर्व हृदयों में है, उसका विनाश तू कैसे करेगा ? मालूम होता है, जैसा मैं मूर्ख हूँ वैसा ही तू मंदमति है । शुक्र के बहकावे में आकर दुष्टनिश्चयी हुआ है । मैं यह छड़ी गाड़ता हूँ जमीन में, इसको तू निकालकर दिखा तो मानूँगा कि तू विष्णु से युद्ध कर सकता है ।''

ब्राह्मण वेशधारी भगवान ने जमीन में अपनी छड़ी गाड़ दी । प्रह्लाद उठा सिंहासन से । छड़ी को खींचा एक हाथ से, फिर दोनों हाथों से पूरा बल लगाया । छड़ी खींचने में झुकना पड़ा, बल लगा, प्राण-अपान की गति सम हुई । राज्यमद कुछ कम हुआ । प्रह्लाद की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि यह ब्राह्मण वेशधारी कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता है । भक्ति के पुराने संस्कार थे ही । ऊपर से जो कुसंस्कार पड़े थे, वे हटते ही प्रह्लाद उस ब्राह्मण वेशधारी को नम्रतापूर्वक आदरभरे वचनों से कहने लगा : ''हे विप्रवर ! आप कौन हैं ?''

भगवान : ''जो अपने को नहीं जानता, वह

मेरे को भी ठीक से नहीं जानता। जो अपने को और मेरे को नहीं जानता, वह माया के संस्कारों में सूखे तिनके की नाईं हिलता-डुलता रहता है। हे प्रह्लाद ! तू सन्मति को त्यागकर कुमति के अधीन हुआ है, तब से अशांत और दुःखी हुआ है। **कुनिश्चय करनेवाला व्यक्ति हमेशा दुःख का भागी होता है।''**

करुणानिधान के कृपापूर्ण वचन सुनकर प्रह्लाद समझ गया कि ये तो मेरे श्रीहरि हैं। चरणों पर गिर पड़ा, क्षमा माँगने लगा। तब भक्तवत्सल भगवान प्रह्लाद को कहने लगे : ''क्षमा तो तू कर, मुझे मारने के लिए इतनी सेना तैयार की है ! तू क्षमा कर मुझे।''

कहाँ तो पिता की इतनी यातनाएँ - पर्वत से गिराना, पानी में फिकवाना आदि, ये सहन करने पर भी प्रह्लाद भगवान विष्णु की भक्ति में लगा रहा। शुक्राचार्य ने अपना होकर धीरे-धीरे कुसंस्कार भर दिये तो वही प्रह्लाद विष्णुजी से युद्ध करने को तत्पर हुआ। जब तक सर्वव्यापक श्रीहरि-तत्त्व का साक्षात्कार नहीं होता, अंतःकरण से संबंध-विच्छेद नहीं होता, परिच्छिन्नता नहीं मिटती तब तक जीव की श्रद्धा और स्थिति चढ़ती-उतरती रहती है, भाव बदलते रहते हैं। वैकुण्ठ में भगवान के पार्षद जय-विजय प्रतिदिन श्रीहरि का दर्शन करते हैं लेकिन हरि-तत्त्व का साक्षात्कार न होने के कारण उनको भी तीन जन्म लेने पड़े। प्रह्लाद को श्रीहरि के श्रीविग्रह का दर्शन हुआ, श्रीहरि सर्वत्र हैं ऐसा वृत्तिज्ञान तो था लेकिन वृत्तिज्ञान सुसंग-कुसंग से बदल जाता है, पूर्ण बोध अबदल है। **प्रह्लाद जैसों की भी श्रद्धा कुसंग के कारण हिल सकती है तो हे साधक भैया ! तू ऐसे वातावरण से, ऐसे व्यक्तियों से, ऐसे संस्कारों से बचना जो तुझे साधना के मार्ग से, ईश्वर के रास्ते से फिसलाते हैं, रसमयी श्रद्धा, सत्कर्म व शांति से तुझे विचलित करते हैं।** ❐

स्वतःसिद्ध को जान लो

- पूज्य बापूजी

'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में आता है -

वसिष्ठजी बोले : 'हे रामजी ! जो धैर्यवान, बुद्धिमान पुरुष है वह सत्शास्त्रों को विचारे, संतजनों का संग करके उनका आचरण ग्रहण करे और जो दुःख का नाश करनेवाली ज्ञानदृष्टि है, सिर्फ उसको यत्न करके अंगीकार करे।'

जैसे मदालसा रानी थी, चुड़ाला थी, सुलभा थी, सती अनसूया थी, गार्गी थी, जनक महाराज थे, शुकदेव मुनि थे, कबीरजी थे, ऐसे हम ज्ञानदृष्टि में मजबूत बनें तो बेड़ा पार हो जाय।

हैं तो हम आत्मा, नाम रख दिया सो एंड सो एम.बी.बी.एस., डॉक्टर सो एंड सो...। ये तो बुद्धि में संस्कार पड़े हैं एम.बी.बी.एस. के और मान लिया कि 'मैं डॉक्टर हूँ।' तो प्रमाणपत्र से, इससे-उससे यह सिद्ध करना पड़ता है कि ऐसे डॉक्टर हो, आत्मा को सिद्ध नहीं करना पड़ता। डॉक्टर नहीं थे तब भी हम थे और बूढ़े हो जायें, डॉक्टरी छोड़ दें, शरीर भी छोड़ दें तब भी हम तो हैं। हम स्वतःसिद्ध हैं, डॉक्टर स्वतःसिद्ध नहीं है। डॉक्टर को तो एम.बी.बी.एस. के प्रमाणपत्ररूपी उपाधियाँ चाहिए। वकील को भी उपाधियाँ चाहिए। महंत हो तो आश्रम होना चाहिए, उपाधि होनी चाहिए, ये होना चाहिए... लेकिन मुझे होने में ('मैं' के अस्तित्व में) किसी उपाधि की जरूरत नहीं। बड़ा नेता बनने के लिए बड़ी कुर्सी चाहिए लेकिन वह कुर्सी कभी

टिकती नहीं, अपना-आपा कभी मिटता नहीं। स्वतःसिद्ध तत्त्व अपने को कुछ सिद्ध नहीं करना चाहता, वह तो सारे ब्रह्माण्ड का गुरु है ही।

एक महात्मा मुस्करा रहे थे। कुछ लोग उनको गालियाँ दे रहे थे। दूसरे महात्मा बोले : ''बाबाजी ! ये लोग आपको गालियाँ दे रहे हैं और आप मुस्करा रहे हैं !''

पहले महात्मा बोले : ''गाली हाड़-मांस को दे रहे हैं। इसको तो हम भी दे रहे हैं - अरे, थूक, कफ, मल-मूत्र... इनका क्या हम आदर करते हैं ? ये नमाज पढ़ने जा रहे हैं, मेरी पूजा करने जा रहे हैं। 'अल्लाह हो अकबर...' करके मेरे को सिजदा करेंगे। इसलिए मैं प्रसन्न हूँ कि ये मेरे बेटे हैं, मेरे उपासक हैं; मेरी उपासना करने जा रहे हैं।''

बोले : ''महाराज ! वे मुसलमान हैं और आपको, एक हिन्दू संत को देखकर चिढ़के ऐसे ही बकवास कर रहे हैं, लांछन लगा रहे हैं, गालियाँ दे रहे हैं - यह ईर्ष्या का दुर्गुण है।''

''यह दुर्गुण उनमें नहीं है, उनके मन में है, संस्कारों में है।''

दूसरे लोग महात्मा को प्रणाम करके मंदिर में गये।

''बापजी ! ये आपको प्रणाम कर रहे हैं।''

तब भी महात्मा पर कोई असर नहीं हुआ। बोले : ''ये **'राम-राम'**, **'ॐ नमः शिवाय'** करके मेरी उपासना करते हैं और वे **'अल्लाह हो अकबर...'** करके मेरी उपासना करते हैं। मेरा तो अद्भुत खेल है।''

''महाराज ! रोटी का टुकड़ा माँगने जाते हो और 'मेरा अद्भुत खेल है...' कहके अपने को धोखे में रख रहे हो ?''

''नहीं-नहीं, रोटी का टुकड़ा मैंने कभी नहीं माँगा, यह तो प्राण माँगते हैं। उनको आवश्यकता है तो शरीर को खिलाना पड़ता है। प्राणों ने रोटी का टुकड़ा माँग लिया तो क्या ! प्राणों ने प्राणवालों से माँगा। यह तो माया में खेल हुआ। माया का आधार तो 'मैं' ज्ञानस्वरूप सबको सत्ता-स्फूर्ति देता हूँ। मैंने कभी कुछ माँगा ही नहीं। 'मैं' वह स्वतःसिद्ध ब्रह्म हूँ, अविनाशी हूँ, अकाल हूँ। काल बदलता है इसको भी 'मैं' जानता हूँ। जिसने सुबह के ७.३० देखे वही ७.३५ देखता है और वही ७.४० की कल्पना करता है। ७.३५ बजके चले गये, ७.४० आ रहे हैं, ८ भी आ रहे हैं, जा रहे हैं लेकिन उनको देखनेवाला 'मैं' नहीं गया। तो जैसे मैं सुबह के ७, ७.४० को देखता हूँ ऐसे दिन भर को देखता हूँ, सप्ताह को देखता हूँ, वर्ष को देखता हूँ, बचपन को देखता हूँ, जवानी को देखता हूँ... पूरे काल का 'मैं' ज्ञाता हूँ, 'मैं' अकाल हूँ। काल बीत गया, 'मैं' थोड़े ही बीता हूँ ! इस जगह पर गया, उस जगह पर गया... देश बदल गया, 'मैं' थोड़े ही बदलता हूँ ! वस्तु बदल जायेगी... मौत के बाद शरीर जल जायेगा, हड्डियाँ हो जायेगा, 'मैं' थोड़े ही हड्डी होता हूँ ! मौत के बाद भी 'मैं' रहता हूँ। तो जो देश, काल, वस्तु से परे है वह ब्रह्म, चैतन्य आत्मा 'मैं' हूँ, ऐसा जो जानते हैं ऐसे लोगों के लिए ज्ञान है, दूसरों के लिए नहीं अर्थात् जो निर्वासनिक होना चाहते हैं, अपनी मुक्ति चाहते हैं, नश्वर पदार्थों को तुच्छ समझते हैं और खा-पीके जीभ से स्वाद लेकर फिर विष्ठा बनेगी ऐसा जिनको पता है, ऐसे लोग ही आत्मज्ञान के अधिकारी हैं; विलासी, निगुरे, झगड़ाखोर लोग नहीं।

'मैं जिलाधीश बनूँ, मैं प्राध्यापक बनूँ, मैं सेठ बनूँ...' बनकर फिर क्या होगा ? तू जो है उसको जान ले, फिर तो सबका बाप ही है तू। अपने-आप परिस्थिति के बाप ! बनना नहीं, अपने को कुछ सिद्ध नहीं करना अपितु जो स्वतःसिद्ध आत्मतत्त्व है, जिसे मौत का बाप भी छीन नहीं सकता, उस परम पद को पाने का दृढ़ संकल्प करके पा ले। अन्य पदवी राजा का बाप भी अपनी रख नहीं सकता। संसार की चीज रख नहीं सकते, परमात्मा को छोड़ नहीं सकते। उस परमात्मा को प्रयत्न करके जान ले बस ! ❐

उत्तम-में-उत्तम सेवक हैं भगवान !

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

भगवान जैसा सेवक त्रिलोकी में मिलना असम्भव है । भगवान हमारे स्वामी तो हैं ही हैं, लेकिन भगवान जैसा सेवक भी हमारा दूसरा कोई नहीं हो सकता । कितनी सेवा करते हैं हमारी ! माँ हमारे शरीर की जन्मदात्री तो है लेकिन माँ जैसी हमारी देखभाल करनेवाली कोई सेविका नहीं मिल सकती । ऐसे ही भगवान जैसा सेवक दूसरा नहीं मिल सकता है । भगवान इतने सामर्थ्यवान होते हुए भी ऐसी सेवा करते हैं कि आपको क्या बतायें !

भगवान सेवक बनने को भी तैयार, सखा बनने को भी तैयार, माता बनने को भी तैयार, पिता बनने को भी तैयार । कैसे हैं भगवान ! हे प्रभु ! तू तो तू ही है ! भगवान की सर्वव्यापकता, भगवान की सहजता-सुलभता, भगवान की परम सुहृदता, भगवान का परम स्नेह, भगवान की परम रक्षा और भगवान का परम प्रेम... मैं कितना बोलूँगा ! एक आसाराम नहीं, हजार आसाराम हों और एक-एक आसाराम की हजार-हजार जिह्वाएँ हों, फिर भी भगवान की लीला, भगवान की सेवा, भगवान की उदारता का पूरा-पूरा वर्णन नहीं कर सकते ।

मेरी चार दिन की भक्ति और मैं सब कुछ फेंककर बैठ गया और जोर मारा कि

सोचा मैं न कहीं जाऊँगा,
यहीं बैठकर अब खाऊँगा ।
जिसको गरज होगी आयेगा,
सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ॥

ऐसा सेवक को कहा जाता है, स्वामी को थोड़े ही कहा जाता है - **सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ।** साधनाकाल की यह बात याद आयी तो मैंने अपने-आपको प्यार से थोड़ा कोसा । सब कुछ फेंककर मैं बैठ गया और सृष्टिकर्ता को चैलेंज किया तो कैसे भी करके उसने खिलाया । यह तो उसकी उदारता है, सज्जनता है । अगर कोई एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन नहीं लाता और उसी जगह पर गुंडों को भेजता, साँपों को भेजता तो हम क्या करते ? अपने-आपको ही पूछा और मैं खूब हँसा कि उसकी कितनी उदारता है ! वह कितना-कितना ख्याल रखता है ! बच्चा बोल देता है माँ को कि 'मैं नहीं खाऊँगा... जिसको गरज होगी खिलायेगा...' तो माँ क्या डंडा लेकर उसको पीटेगी अथवा भूखा रखेगी ?

'मेरे बाप ! खा ले' ऐसा करके खिलायेगी । तो माँ जैसी सेविका मिलना सम्भव नहीं है । ऐसे ही भगवान जैसा सेवक मिलना भी सम्भव नहीं है । भगवान हमारे रक्षक हैं, पोषक हैं, समर्थ हैं - सब कुछ कर सकते हैं और प्राणिमात्र के सुहृद हैं । **सुहृदं सर्वभूतानाम् ।** इस बात को आप जान लो, हृदयपूर्वक मान लो तो आपको शांति हो जायेगी । भगवान जो करते हैं अच्छे के लिए करते हैं - दुश्मन देकर हमारा अहंकार और असावधानी मिटाते हैं, मित्र और सज्जन देकर हमारा स्नेह और औदार्य बढ़ाते हैं... न जाने कैसी-कैसी लीला करते-करते सद्गुरु के द्वारा ज्ञान का उपदेश देके हमको ब्रह्म बना देते हैं, जीवन्मुक्त बना देते हैं । कहाँ तो एक बूँद वीर्य से जीवन की शुरुआत होती है और कहाँ ब्रह्म बना देते हैं ! यह उनकी करुणा-कृपा नहीं है तो क्या किसीकी चालाकी है ? एक बूँद से शुरुआत हुई शरीर की, कैसे-कैसे पढ़ाया, कैसा-कैसा संग, **(शेष पृष्ठ ३० पर)**

सब रोगों की औषधि : गुरुभक्ति

हम लोगों के जीवन में दो तरह के रोग होते हैं : बहिरंग और अंतरंग। बहिरंग रोगों की चिकित्सा तो डॉक्टर लोग करते ही हैं और वे इतने दुःखदायी भी नहीं होते हैं जितने कि अंतरंग रोग होते हैं। हमारे अंतरंग रोग हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, अहंकार।

'भागवत' में इस एक-एक रोग की निवृत्ति के लिए एक-एक औषधि बतायी है। जैसे काम के लिए असंकल्प, क्रोध के लिए निष्कामता, लोभ के लिए अर्थानर्थ (धन से उत्पन्न विभिन्न अनर्थ) का दर्शन, भय के लिए तत्त्वावदर्शन आदि।

ओषति दोषान् धत्ते गुणान् इति औषधिः ।

जो दोष को जला दे और गुणों का आधान कर दे, उसका नाम है औषधि। फिर अलग-अलग रोग की अलग-अलग औषधि न बताकर एक औषधि बतायी और वह है अपने गुरु के प्रति भक्ति। **एतत् सर्वं गुरोर्भक्त्या ।**

यदि अपने गुरु के प्रति भक्ति हो तो वे बतायेंगे कि 'बेटा ! तुम गलत रास्ते से जा रहे हो। इस रास्ते से मत जाओ। उसको ज्यादा मत देखो, उससे ज्यादा बात मत करो, उसके पास ज्यादा मत बैठो, उससे मत चिपको, अपना चिंतन, संग, आहार-व्यवहार सात्त्विक रखो, अच्छा रखो।' आदि।

जब गुरु के चरणों में तुम्हारा प्रेम हो जायेगा तो इन भीतर के दोषों से प्रेम हटता जायेगा। भक्ति में ईमानदारी चाहिए, बेईमानी नहीं। बेईमानी सम्पूर्ण दोषों की व दुःखों की जड़ है। सुगमता से दोषों और दुःखों पर विजय प्राप्त करने का उपाय है ईमानदारी के साथ, सच्चाई के साथ, श्रद्धा के साथ और हित के साथ गुरु की सेवा करना। श्रद्धा पूर्ण नहीं होगी तो फिर यदि तुम कहीं भोग करने लगोगे या कहीं यश में, पूजा में, प्रतिष्ठा में फँसने लगोगे और गुरुजी तुम्हें मना करेंगे तो बोलोगे कि 'गुरुजी हमसे ईर्ष्या करते हैं, हमारी उन्नति उनसे देखी नहीं जाती, इनसे नहीं देखा जाता है कि लोग हमसे प्रेम करें। गुरुजी के मन में अब ईर्ष्या आ गयी है और ये अब हमको आगे नहीं बढ़ने देना चाहते हैं।'

साक्षात् भगवान तुम्हारे कल्याण के लिए गुरु के रूप में पधारे हुए हैं और ज्ञान की मशाल जलाकर तुमको दिखा रहे हैं, दिखा ही नहीं रहे हैं तुम्हारे हाथ में दे रहे हैं। तुम देखते हुए चले जाओ आगे... आगे... आगे...। परंतु उनको कोई साधारण मनुष्य समझ लेता है, किसीके मन में ऐसी असद् बुद्धि, ऐसी दुर्बुद्धि आ जाती है तो उसकी सारी पवित्रता गजस्नान के समान हो जाती है। जैसे हाथी सरोवर में स्नान करके बाहर निकले और फिर सूँड़ से धूल उठा-उठाकर अपने ऊपर डालने लगे तो उसकी स्थिति वापस पहले जैसी ही हो जाती है, वैसे ही गुरु को साधारण मनुष्य समझनेवाले की स्थिति भी पहले जैसी ही हो जाती है। ईश्वर सृष्टि बनाता है अच्छी-बुरी दोनों, सुख-दुःख दोनों, चर-अचर दोनों, मृत्यु-अमरता दोनों। परंतु संत-महात्मा,

सद्गुरु मृत्यु नहीं बनाते हैं, केवल अमरता बनाते हैं । वे जड़ता नहीं बनाते हैं, केवल चेतनता बनाते हैं । वे दुःख नहीं बनाते, केवल सुख बनाते हैं । तो संत-महात्मा माने केवल अच्छी-अच्छी सृष्टि बनानेवाले, लोगों के जीवन में साधन डालनेवाले, उनको सिद्ध बनानेवाले, उनको परमात्मा से एक करानेवाले । लोग कहते हैं कि 'परमात्मा भक्तों पर कृपा करते हैं', तो करते होंगे, पर महात्मा न हों, सद्गुरु न हों तो कोई भक्त ही नहीं होगा और भक्त ही जब नहीं होगा तो परमात्मा किसी पर कृपा भी कैसे करेंगे ? इसलिए परमात्मा सिद्ध-पदार्थ हैं और सच्चे संत, सद्गुरु, महात्मा प्रत्यक्ष हैं । परमात्मा या तो परोक्ष हैं - सृष्टिकर्ता-कारण के रूप में और या तो अपरोक्ष हैं - आत्मा के रूप में । परोक्ष हैं तो उन पर विश्वास करो और अपरोक्ष हैं तो **'निर्गुणं निष्क्रियं शान्तं'** हैं ।

परमात्मा का यदि कोई प्रत्यक्ष स्वरूप है तो वह साक्षात् महात्मा (अर्थात् सच्चे संत, सद्गुरु) ही है । महात्मा ही आपको ज्ञान देते हैं ।

आचार्यात् विदधति, आचार्यवान पुरुषो वेदा ।

जो लोग आसमान में ढेला फेंककर निशाना लगाना चाहते हैं उनकी बात दूसरी है । पर असल बात यह है कि बिना महात्मा के न परमात्मा के स्वरूप का पता चल सकता है, न उसके मार्ग का पता चल सकता है । हम परमात्मा की ओर चल सकते हैं कि नहीं, इसका पता भी महात्मा के बिना नहीं चल सकता है । इसलिए 'भागवत' के प्रथम स्कंध में ही भगवान के गुणों से भी अधिक गुण महात्मा में बताये गये हैं । ग्यारहवें स्कंध में तो भगवान ने यहाँ तक कह दिया है कि **मद्भक्तपूजाभ्यधिका ।**

'मेरी पूजा से भी बड़ी है महात्मा की पूजा ।'

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'साधना में सफलता' से)

उपाधि हटाओ, व्यापक हो जाओ

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

जैसे तरंग पानी को खोजने जाय तो बहुत कठिन होगा लेकिन तरंग शांत हो जाय, फिर पानी को खोजे तो पहले वह पानी है बाद में तरंग है । गहना सोने को खोजने जाय तो पहले वह सोना है बाद में गहना है । घड़ा मिट्टी को खोजे तो पहले वह मिट्टी है बाद में घड़ा है । ऐसे ही पहले हम आत्मा हैं बाद में जीव हैं; बाद में गुजराती, सिंधी, मराठी हैं; बाद में नगर-अध्यक्ष, सांसद, पीएच.डी., डी.लिट्., फलाना-ढिमका हैं ।

जाति, पद-प्रतिष्ठा आदि की इन उपाधियों से हम छोटे हो जाते हैं । मनुष्यता व्यापक है लेकिन भारतवासी माना तो एक टुकड़े में आ गये, भारत में भी उत्तर प्रदेश के माना तो और छोटे दायरे में हो गये, उत्तर प्रदेश में भी अपने को लखनऊ के मान लिया तो और छोटे हो गये । लखनऊ में भी फलानी डिग्रीवाले तो बाकी के लोगों से अलग हो गये ।

राष्ट्र बोले तो पूरा राष्ट्र आ गया । महाराष्ट्र बोले तो मुंबई, नागपुर आदि-आदि हो गया छोटा । उत्तरांचल बोले तो भारत से कटके छोटा-सा हो गया । उत्तरांचल में भी हरिद्वार तो और छोटा हो गया । हरिद्वार से भी कटकर 'हर की पौड़ी' पर

आ गये । 'हर की पौड़ी में भी ब्रह्मकुण्ड से दायीं ओर, जुग्गू पंडा के बायीं ओर मेरा तख्त लगा है और फलाना पंडा एम.ए., बी.एड. मेरा नाम है । मेरे पास से कर्मकांड कराइये ।'

अब पंडा तो समझता है कि मेरी बड़ी उपाधि है लेकिन कट-पिटकर छोटा ही हो गया न बेटे !

जितनी-जितनी उपाधियाँ बढ़ती गयीं, उतने-उतने आप छोटे होते गये, संकीर्ण होते गये। अपनी व्यापकता भूलकर 'मैं-मेरे' में उलझते गये, जन्म-मरण के फंदे में बँधते गये ।

आप व्यवहार में भले उपाधि रखो लेकिन बीच-बीच में सारी उपाधियाँ हटाकर उस व्यापक परमात्मा के साथ के संबंध को याद कर लिया करो । जैसे बाहर जाते हैं न, तो कपड़े, टाई, जूता आदि पहनते हैं लेकिन जब घर आते हैं तो सब हटाते हैं तो कैसे तरोताजा हो जाते हैं ! ऐसे ही यह जो मन में भूत भरा है कि 'मैं फलाना, फलानी पदवीवाला हूँ... मैं यह, मैं वह...' यह सब हटाकर निर्दोष नन्हे की नाईं बैठ जाओ कि 'बिन फेरे हम तेरे...'

भगवान की मूर्ति हो तो ठीक है, न हो तो चलेगा । दीपक जला सको तो ठीक है, नहीं हो तो चलेगा । 'ॐ' अथवा स्वस्तिक का चित्र हो तो ठीक है, नहीं तो व्यापक आकाश की तरफ एकटक देखते हुए प्यार से ॐकार का दीर्घ उच्चारण करो । विनियोग करके फिर दीर्घ उच्चारण करो । भगवान का नाम लेना क्रिया नहीं पुकार में गिना जाता है ।

आप ४० दिन तक प्रतिदिन १०-२० मिनट का यह प्रयोग करके देखो, कितना फर्क पड़ता है ! कितना लाभ होता है ! उस व्यापक के साथ एकाकार होने में कितनी मदद मिलती है ! असत् नाम, रूप तथा पद-पदवियों में बँधकर संकीर्णता की तरफ जा रहे जीव को अपने मूल व्यापक स्वरूप में पहुँचने में कितनी सुविधा हो जाती है ! देखें फर्क पड़ता है कि नहीं पड़ता, ऐसा संशय नहीं करना । फायदा होगा... जितना प्रीतिपूर्वक करेंगे, जितना विश्वास होगा उतना फायदा !

विश्वासो फलदायकः ।

गप्पे लगाकर, फिल्में देखकर जो सुख चाहते हैं, वह नकली सुख है, विकारी सुख है, तुमको संसार में फँसानेवाला है और भगवान की प्रीति से, पुकार से जो सुख मिलता है वह असली सुख है, आनंददायी सुख है । उस असली सुख से आपकी बुद्धि बढ़ेगी, ज्ञान बढ़ेगा; आपमें भगवान का सौंदर्य, प्रीति और सत्ता जागृत हो जायेगी ।

केवल भगवान को प्रीतिपूर्वक सुबह-शाम पुकारना शुरू कर दो । दिन में दो-तीन बार कर सको तो और अच्छा है । फिर आप देखोगे कि अपना जो समय असत् उपाधियों के असत् अहंकार में पड़कर बर्बाद हो रहा था, वह अब बचकर सत्स्वरूप परमात्मा के साथ एकाकार होने में, व्यापक होने में, आत्मा के असली सुख में पहुँचाने में कितना मददरूप हो रहा है ! फिर धीरे-धीरे असली सुख का अभ्यास बढ़ता जायेगा और आप व्यापक ब्रह्म के साथ एकाकार होकर जीवन्मुक्त हो जायेंगे । □

यो हि कालो व्यतिक्रामेत् पुरुषं कालकांक्षिणम् ।
दुर्लभः स पुनस्तेन कालः कर्मचिकीर्षुणा ॥

'जो पुरुष भविष्य की प्रतीक्षा में उपलब्ध अवसर को खो देता है, उसे काम करने की इच्छा होने पर भी उस अवसर को फिर से प्राप्त करना कठिन होता है ।'

(महाभारत, शांति पर्व : १०३.२१)

क्षमा बलमशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा ।
क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते ॥

'क्षमा दुर्बलों का बल है, सबलों का भूषण है । क्षमा वश करनेवाली है । क्षमा से संसार में क्या सिद्ध नहीं हो सकता !'

साकार से निराकार की ओर

- पूज्य बापूजी

भाव हैं लेकिन बुद्धि के ऊँचे स्तरों पर नहीं पहुँचे हैं, बुद्धि परब्रह्म में ठहरने के काबिल नहीं है ऐसे व्यक्तियों के लिए 'भगवद्गीता' के बारहवें अध्याय के ये दो श्लोक बड़े काम के हैं । भगवान श्रीकृष्ण बता रहे हैं :

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥

'मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा । इसके उपरांत तू मुझमें ही निवास करेगा, इसमें कुछ भी संशय नहीं है ।' (८)

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥

'यदि तू मन को मुझमें अचल स्थापन करने के लिए समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन ! अभ्यासरूप योग के द्वारा मुझको प्राप्त होने के लिए इच्छा कर ।' (९)

अर्जुन को तत्त्वज्ञान का उपदेश, सांख्य का उपदेश, कर्म का उपदेश और विश्वरूप का दर्शन कराते हुए ग्यारह अध्याय समाप्त हुए । बारहवें अध्याय का आठवाँ और नौवाँ श्लोक खबर दे रहा है कि उस गोलचन्द्र ने देखा होगा कि यह अर्जुन की ही समस्या नहीं सारे विश्व की समस्या है । इसलिए भगवान इन दो श्लोकों में कह रहे हैं कि हे अर्जुन ! यदि तू सर्वत्र मुझे नहीं देख सकता, मुझ निराकार का ध्यान नहीं कर सकता, मुझ अखण्ड चैतन्य का साक्षात्कार सीधा नहीं कर सकता तो मेरे मुरली-मनोहर रूप का चिंतन करके तू मुझे प्राप्त करने का रास्ता ले ले क्योंकि मेरे श्रीविग्रह के द्वारा तू मुझको प्राप्त हो सकता है । अर्थात् यदि तू घी सीधा हजम नहीं कर सकता है तो लड्डू बनाके खा सकता है, चूरमे और खिचड़ी में डालके खा सकता है ।

ये दो श्लोक प्रायः भावप्रधान व्यक्ति के लिए हो सकते हैं । जिनके हृदय के भाव कुछ कहते हैं, बुद्धि कुछ कहती है; हृदय कुछ चाहता है तो बुद्धि कुछ चाहती है । भावुक आदमी मंदिर में जाता है, उसका हृदय तो खुश होता है लेकिन बुद्धि में संशय होता है कि 'भगवान कैसे हैं, मिलेंगे कि नहीं, ये भगवान बड़े कि वे भगवान बड़े ? मैं जो कर रहा हूँ वह ठीक कर रहा हूँ कि गलत कर रहा हूँ ?' हृदय को एक तरफ संतोष होगा परंतु बुद्धि दूसरी तरफ बगावत करेगी । कई बुद्धिमान लोग हैं, भगवान के विषय में सुन लेते हैं, जान लेते हैं, बोल लेते हैं, बुलवा लेते हैं लेकिन उनका हृदय कुछ गड़बड़ करता है । यह चैतन्य महाप्रभु के जीवन में घटा था । वे न्याय-दर्शन में इतने विद्वान थे कि बड़े-बड़ों को परास्त कर देते थे । बुद्धि से तो वे भगवान को सिद्ध कर देते थे लेकिन हृदय आनंद से वंचित था । फिर कीर्तन का सहारा लेकर आत्मा की यात्रा की, परमात्मा को सबमें देखने की यात्रा की ।

एक बार कोई महात्मा घूमते-घामते आये और एक दरख्त (वृक्ष) के नीचे बैठ गये । वहीं बैठे-बैठे उन्हें बारह साल हो गये । लोग उन्हें भिक्षा लाके दे देते थे और बाबाजी दरख्त की छाया जितने इलाके में जाती उतना इलाका छोड़कर

कहीं बाहर नहीं जाते थे, सिवाय शौच जाने के। जो उन बाबा का असली नाम था, वह खो गया और लोग उनको 'दरख्तिया बाबा' कहने लगे।

दरख्तिया बाबा के पास अखंडानंदजी गये और कहा कि ''महाराज ! आप बारह साल से इधर हैं, आपको देखकर बड़ी शांति मिलती है। आप इधर कैसे डट गये ?''

बोले : ''कोई भक्त बोले - 'इस गाँव आओ', कोई बोले - 'इस गाँव आओ', यह झंझट छूटा। अन्य रूप, अन्य नाम का चिंतन छूटा, अन्य यात्राएँ छूटीं और अनन्य में बैठ गये !''

बाबा सचमुच विश्रांति पाये हुए थे। विश्रांति पाये माने ज्ञातज्ञेय थे, साक्षात्कारी पुरुष थे। अखंडानंदजी ने पूछा कि ''महाराज ! मैं आपसे यश नहीं चाहता, धन नहीं चाहता, बाहर की विद्या भी नहीं चाहता लेकिन मुझ पर कृपा करो कि मेरा मन और बुद्धि भगवान में लग जायें बस।''

दरख्तिया बाबा ने योग्यता देखी और बोले : ''देख ! आज तुझे एक दिन का मौका देता हूँ, कल फिर इसी समय आ जाना और मेरे को बताना कि तुम्हारा मन और बुद्धि भगवान के सिवाय कौन-सी जगह पर हैं ? तू कोई ऐसी जगह ढूँढ़ लेना जहाँ भगवान न हों तो मैं मन वहाँ से हटाकर भगवान में लगा दूँगा।'' क्या बढ़िया बात कह दी लेकिन यह ज्ञान होना चाहिए, फिर तो इन श्लोकों के उपदेश की जरूरत नहीं है। यह समझ आ जाय - **जहाँ देखो वहाँ राम है। जो सुमिरो सो राम है।** परंतु यह सबके भाग्य की बात नहीं है।

तो अर्जुन जैसा व्यक्ति, इतना ऊँचा... जितनी ऊँचाई हो सकती है मनुष्य की सच्चाई, वीरता, दृढ़ता में, संयम-ब्रह्मचर्य में उतनी अर्जुन की थी। ऐसा अर्जुन और श्रीकृष्ण जैसा वक्ता, फिर भी श्रीकृष्ण ने कहा कि 'हे अर्जुन ! यदि तू मेरे समग्र स्वरूप में प्रवेश नहीं कर सकता है तो मेरे साकार रूप का अवलम्बन लेकर धीरे-धीरे निराकार तत्त्व में चले आना।' 'गीता' के १०वें अध्याय में भगवान ने कहा है : 'वृक्षों में पीपल मैं हूँ।' क्यों भाई ! ऐसा क्यों ? जब आप बोलते हो : 'मैं सर्वत्र हूँ।'

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।

'हे अर्जुन ! मैं सब भूतों के हृदय में स्थित सबका आत्मा हूँ।' **(गीता : १०.२०)**

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

'हे अर्जुन ! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।' **(गीता : १८.६१)**

फिर बोलते हो : 'वृक्षों में पीपल मैं हूँ, सिद्धों में कपिल मुनि मैं हूँ, शब्दों में प्रणव मैं हूँ।'

प्रणव आप हो तो दूसरे शब्द कहाँ से आये ? पीपल आप हो तो दूसरे वृक्ष कहाँ से आये ?

यदि अखण्ड में तुम नहीं जा सकते हो तो व्यापक चैतन्य में जो कुछ विशेष-विशेष है... तुम भी सविशेष चेतन हो तो वहाँ भी कोई सविशेष दिखेगा तो वहाँ तुम्हारा मन जल्दी लग जायेगा इसलिए बताया कि 'वृक्षों में पीपल मैं हूँ, सिद्धों में कपिल मुनि मैं हूँ।' तो मानना पड़ेगा कि भगवान के आगे अधिकारी-भेद की समस्या रही होगी। क्योंकि भगवान ने 'गीता' में कहा है कि यह ज्ञान मैंने आदि में तो सूर्य को दिया था और सूर्य ने अपने पुत्र मनु को दिया, लेकिन समय पाकर यह ज्ञान लुप्त हो गया है क्योंकि यह बड़ा ऊँचा है, खूब ऊँचा है।

यह वेदांत कठिन तो है लेकिन इसके सिवाय कोई रास्ता नहीं है। क्यों कठिन है कि मन बहिर्मुख हो गया, बुद्धि खण्ड-खण्ड में रुक गयी। तो उपाय भी बंसीधर गोलचन्द्र बता रहे हैं कि 'यदि तू मेरे

समग्र स्वरूप को नहीं जान सकता तो अपना मन और बुद्धि मेरे साकार रूप में लगा दे ।'

मंदिर में बैठते हो, यह नितांत प्रारम्भिक स्थिति है । संगमरमर के ठाकुरजी में तुम अपने मन को लगाओगे, अपने हृदय को वहाँ स्थिर करोगे तो बुद्धि बगावत करेगी और बुद्धि से यदि तर्क-वितर्क करके आत्मा को सिद्ध करोगे तो हृदय कबूल नहीं करेगा, इसलिए अभ्यासयोग की जरूरत पड़ती है । अभ्यासयोग करने से हृदय की शुद्धि होती है और बुद्धि सूक्ष्म होती है । हृदय शुद्ध और मति सूक्ष्म हो जाय, फिर थोड़ा-सा ही आत्मवेत्ताओं का सान्निध्य मिल जाय तो बुद्धि सूक्ष्मतर हो जायेगी और निदिध्यासन करने से बुद्धि सूक्ष्मतम हो जाती है तो आत्म-साक्षात्कार हो जाता है । जिस आत्मा में भगवान नारायण विश्रांति पाते हैं, जिस आत्मा में भगवान सदाशिव समाधिस्थ रहते हैं उस आत्मप्रसाद तक पहुँचना ही बहादुरी है ।

अभी विज्ञान ने खोज लिया है - केटेलिटिक एजेंट । वह क्या होता है ? जैसे पानी को तोड़ो तो दो तत्त्व मिलते हैं - हाइड्रोजन और ऑक्सीजन, लेकिन इन दोनों तत्त्वों को जोड़ो तो पानी नहीं होगा । आकाश में पानी कब बनता है ? जब विद्युत चमकती है तो हाइड्रोजन व ऑक्सीजन के मेल से पानी हो जाता है। तो विद्युत का होना अनिवार्य है, यह विद्युत केटेलिटिक एजेंट है । ऐसे ही सामान्य चेतन और विशेष चेतन - हाइड्रोजन, ऑक्सीजन दोनों हैं, फिर भी साक्षात्काररूपी, ब्रह्मानंदरूपी जल की वृष्टि नहीं होती । जब ब्रह्मवेत्ता का सान्निध्यरूपी केटेलिटिक एजेंट मिलता है तो उससे चिदाभास की ब्रह्माकार वृत्ति होने से ब्रह्म-साक्षात्कार हो जाता है, ब्रह्मानंद आता है । ❐

दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा एवं श्री योग वेदांत सेवा समितियों व साधकों के दैवी पुरुषार्थ से देश भर के १२,११५ विद्यालयों में १३,०७,६४९ विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता का लाभ लिया । राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा २६ दिसम्बर को सूरत ध्यान योग शिविर में सम्पन्न हुई, जिसमें विभिन्न राज्यों से आये हुए विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रथम तीन विद्यार्थियों को पूज्य बापूजी के करकमलों से स्वर्ण पदक, नकद राशि व पुरस्कार तथा अगले दस विद्यार्थियों को रजत पदक व पुरस्कार पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । साथ ही सबसे ज्यादा विद्यार्थी पंजीकरण करने के लिए दिल्ली मैट्रो समिति व पुणे (महा.) समिति को प्रथम, छिंदवाड़ा (म.प्र.) को द्वितीय, खरगोन (म.प्र.) को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ । अन्य ४१० विजेताओं को सांत्वना पुरस्कार दिये गये । क्षेत्रीय स्तर पर प्रतियोगिता में विशेष सफलता-प्राप्ति हेतु ३४,४०२ विद्यार्थियों एवं परीक्षा के उत्तम आयोजनार्थ ४,१६९ विद्यालयों को भी पुरस्कृत किया जा रहा है ।

१४ फरवरी को अपने घर, बाल संस्कार केन्द्र व विद्यालयों में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें । इस हेतु मार्गदर्शन व प्रचार-सामग्री प्राप्त करने के लिए समितियाँ सम्पर्क करें :

बाल संस्कार मुख्यालय, अहमदाबाद ।
फोन : ३९८७७७४९, २७५०५०१०-११.
e-mail : bskamd@gmail.com

समग्र स्वरूप को नहीं जान सकता तो अपना मन और बुद्धि मेरे साकार रूप में लगा दे ।'

मंदिर में बैठते हो, यह नितांत प्रारम्भिक स्थिति है । संगमरमर के ठाकुरजी में तुम अपने मन को लगाओगे, अपने हृदय को वहाँ स्थिर करोगे तो बुद्धि बगावत करेगी और बुद्धि से यदि तर्क-वितर्क करके आत्मा को सिद्ध करोगे तो हृदय कबूल नहीं करेगा, इसलिए अभ्यासयोग की जरूरत पड़ती है । अभ्यासयोग करने से हृदय की शुद्धि होती है और बुद्धि सूक्ष्म होती है । हृदय शुद्ध और मति सूक्ष्म हो जाय, फिर थोड़ा-सा ही आत्मवेत्ताओं का सान्निध्य मिल जाय तो बुद्धि सूक्ष्मतर हो जायेगी और निदिध्यासन करने से बुद्धि सूक्ष्मतम हो जाती है तो आत्म-साक्षात्कार हो जाता है । जिस आत्मा में भगवान नारायण विश्रांति पाते हैं, जिस आत्मा में भगवान सदाशिव समाधिस्थ रहते हैं उस आत्मप्रसाद तक पहुँचना ही बहादुरी है ।

अभी विज्ञान ने खोज लिया है - केटेलिटिक एजेंट । वह क्या होता है ? जैसे पानी को तोड़ो तो दो तत्त्व मिलते हैं - हाइड्रोजन और ऑक्सीजन, लेकिन इन दोनों तत्त्वों को जोड़ो तो पानी नहीं होगा । आकाश में पानी कब बनता है ? जब विद्युत चमकती है तो हाइड्रोजन व ऑक्सीजन के मेल से पानी हो जाता है। तो विद्युत का होना अनिवार्य है, यह विद्युत केटेलिटिक एजेंट है । ऐसे ही सामान्य चेतन और विशेष चेतन - हाइड्रोजन, ऑक्सीजन दोनों हैं, फिर भी साक्षात्काररूपी, ब्रह्मानंदरूपी जल की वृष्टि नहीं होती । जब ब्रह्मवेत्ता का सान्निध्यरूपी केटेलिटिक एजेंट मिलता है तो उससे चिदाभास की ब्रह्माकार वृत्ति होने से ब्रह्म-साक्षात्कार हो जाता है, ब्रह्मानंद आता है । ❐

दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा एवं श्री योग वेदांत सेवा समितियों व साधकों के दैवी पुरुषार्थ से देश भर के १२,११५ विद्यालयों में १३,०७,६४९ विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता का लाभ लिया । राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा २६ दिसम्बर को सूरत ध्यान योग शिविर में सम्पन्न हुई, जिसमें विभिन्न राज्यों से आये हुए विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । प्रथम तीन विद्यार्थियों को पूज्य बापूजी के करकमलों से स्वर्ण पदक, नकद राशि व पुरस्कार तथा अगले दस विद्यार्थियों को रजत पदक व पुरस्कार पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । साथ ही सबसे ज्यादा विद्यार्थी पंजीकरण करने के लिए दिल्ली मैट्रो समिति व पुणे (महा.) समिति को प्रथम, छिंदवाड़ा (म.प्र.) को द्वितीय, खरगोन (म.प्र.) को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ । अन्य ४१० विजेताओं को सांत्वना पुरस्कार दिये गये । क्षेत्रीय स्तर पर प्रतियोगिता में विशेष सफलता-प्राप्ति हेतु ३४,४०२ विद्यार्थियों एवं परीक्षा के उत्तम आयोजनार्थ ४,१६९ विद्यालयों को भी पुरस्कृत किया जा रहा है ।

१४ फरवरी को अपने घर, बाल संस्कार केन्द्र व विद्यालयों में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें । इस हेतु मार्गदर्शन व प्रचार-सामग्री प्राप्त करने के लिए समितियाँ सम्पर्क करें :

बाल संस्कार मुख्यालय, अहमदाबाद ।
फोन : ३९८७७७४९, २७५०५०१०-११.
e-mail : bskamd@gmail.com

सफलता का रहस्य

महाकारण रूप भीतरवाले अंतर्यामी परमात्मा से कोई नाता बिगाड़ता है तो बाहर के लोग उसे दुःख देते हैं । भीतरवाले से अगर वह अपना नाता नहीं बिगाड़े तो बाहर के लोग भी उससे अपना संबंध नहीं बिगाड़ेंगे । वह अंतर्यामी सबमें बस रहा है । अतः किसीका बुरा न चाहो, न सोचो । जिसका टुकड़ा खाया उसका बुरा तो नहीं लेकिन जिसने गाली दी उसका भी बुरा नहीं चाहो । उसके अंदर भी वही अंतर्यामी परमात्मा बैठा है । हम किसीका बुरा चाहने लग जाते हैं तो अंदरवाले से हम अपना नाता बिगाड़ते हैं । हम अनुचित करते हैं तो भीतरवाला प्रभु रोकता है लेकिन हम आवेग में, आवेश में, विषय-विकारों में, बुद्धि के गलत निर्णयों में आकर भीतरवाले की आवाज दबा देते हैं और गलत काम करते हैं तो ठोकर खानी ही पड़ती है ।

मन कुछ कहता है, बुद्धि कुछ कहती है, समाज कुछ कहता है लेकिन आपके हृदय की आवाज सबसे निराली है तो हृदय की आवाज को ही मानो क्योंकि सबकी अपेक्षा हृदय परमात्मा के ज्यादा नजदीक है ।

बाहर के शत्रु-मित्र का ज्यादा चिंतन मत करो । बाहर की सफलता-असफलता में न उलझो । आँखें खोलो । शत्रु-मित्र, सफलता-असफलता सबका मूल केन्द्र वही अधिष्ठान आत्मा है और वह आत्मा आप ही हो । क्यों कें... कें... करके चिल्ला रहे हो, दुःखी हो रहे हो ! दुःख और चिंताओं के बंडल बना-बनाकर उठा रहे हो और सिर को थका रहे हो ! दूर फेंक दो सब कल्पनाओं को । 'यह ऐसा है, वह वैसा है... यह ऐसा कर डालेगा... वह मार देगा... मेरी फजीहत हो जायेगी... ।' अरे, हजारों बम गिरें फिर भी आपका कुछ नहीं बिगड़ सकता । आप ऐसे अजर-अमर आत्मा हो । आप वही हो ।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

'शस्त्र इस आत्मा को काट नहीं सकते, अग्नि इसको जला नहीं सकती, जल इसको गीला नहीं कर सकता और वायु इसको सुखा नहीं सकती ।' **(गीता : २.२३)**

आप ऐसे हो । अपने मूल में चले आओ । अपने आत्मदेव में प्रतिष्ठित हो जाओ । सारे दुःख-दर्द, चिंताएँ काफूर हो जायेंगी । नहीं तो ऐसा होगा कि मानो समुद्र में डूबता हुआ आदमी एक तिनके को पकड़कर बचना चाह रहा है । संसार की तिनके जैसी वस्तुएँ पकड़कर कोई अमर होना चाहे, सुखी होना चाहे, प्रतिष्ठित होना चाहे तो वह उतना ही पागलपन करता है जितना एक तिनके को पकड़कर सागर को पार करने की चाह रखनेवाला करता है । संसार से पार होना हो, दुःख मिटाना हो, सुखी होना हो ,तो भीतर-ही-भीतर दुःखहारी श्रीहरि की शरण ले लो । परम सुख पाना है तो भीतर परम सुखस्वरूप श्रीहरि को प्यार कर लो । सुख के द्वार खुल जायेंगे । तिनका पकड़कर आज तक कोई समुद्र तैरकर पार नहीं हुआ । संसार की वस्तुएँ पकड़कर आज तक कोई सुखी नहीं हुआ ।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवन विकास' से क्रमशः) ❑

'संदेश' अखबार हो चाहे कोई और हो
पीत पत्रकारिता लम्बा समय नहीं चल सकती

– श्री सुरेन्द्र जैन, राष्ट्रीय सचिव, विश्व हिन्दू परिषद

एक शब्द होता है 'पीत पत्रकारिता' (सिद्धांतहीन, बिकाऊ, सनसनीखेज पत्रकारिता)। यह पीत पत्रकारिता कभी भी लम्बे समय तक नहीं चल सकती। इनको एक्सपोज (बेनकाब) होना ही होता है, फिर चाहे 'संदेश' अखबार हो चाहे कोई और हो। क्या गुजरात के अंदर कच्छ जिले के अंदर नशीली दवाओं का व्यापार नहीं चलता ? क्या नकली करेंसी के काम नहीं चलते ? क्या जेहादी आतंकवाद का काम वहाँ नहीं चलता ? क्या ईसाई मिशनरियों के षड्यंत्र नहीं चलते ? मैं ऐसे अखबारों से पूछना चाहता हूँ कि इनको यदि देश का हित करना है तो देश के खिलाफ चल रहे षड्यंत्रों का इन्होंने कितना पर्दाफाश किया है ?

क्या इनकी प्राथमिकता एक ऐसे संत के विरुद्ध विष-वमन करना है जिस संत को पूरी दुनिया पूजती है ! बापूजी एक ऐसे संत हैं जो कहीं भी जाते हैं तो लाखों लोग उनके पीछे चल देते हैं। यह भी ईर्ष्या का कारण हो सकता है और एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र स्पष्ट है कि इन्हें हिन्दू समाज को समाप्त करना है और उसके लिए हिन्दू समाज के जो आधार हैं उनको अपमानित करना है। संत हिन्दू समाज की आत्मा हैं, उसके प्राण हैं। उनको मालूम है कि अगर संतों को अपमानित कर दिया तो हिन्दू समाज को समाप्त करना आसान होगा। आपको ध्यान में होगा कि जितने हिन्दू-विरोधी लोग रहे हैं, चाहे विदेशी आक्रमणकारी रहे चाहे हमारी आंतरिक राजनीति का हिस्सा रहे, उन सबने हिन्दुओं पर आक्रमण करने के लिए सबसे पहले हिन्दू मंदिरों और हिन्दू संतों को ही निशाना बनाया है। मैं समझता हूँ ये भी उसी चालाकी के साथ, उसी इरादे के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के अंतर्गत काम करते हैं कि हिन्दू संतों के प्रति हिन्दू समाज की आस्था को समाप्त कर दिया जाय, बाद में हिन्दू समाज को नेस्तनाबूद करना आसान होगा।

दो प्रकार के आंदोलन समाज में होते हैं। कुछ आंदोलन ऐसे होते हैं जिनको बुद्धिजीवी प्रारम्भ करते हैं और समाज साथ में लगता है। भारत का यह उदाहरण है कि यहाँ समाज का आंदोलन पहले शुरू होता है और बुद्धिजीवी बाद में उसका अनुसरण करते हैं। पूरे देश का समाज जब पूज्य आसारामजी के साथ खड़ा हुआ दिखाई देगा, तब यही बुद्धिजीवी जो चुप दिखाई देते हैं या बापूजी के खिलाफ तरह-तरह के तर्क गढ़ते हुए दिखाई देते हैं, मैं आपको इतिहास के उदाहरण देकर यह स्पष्ट कर सकता हूँ कि ये सब लोग पूज्य आसारामजी बापू की चिरौरियाँ (प्रार्थनाएँ) करते हुए और उनकी चरण-वंदना करते हुए दिखाई देंगे और वे दिन ज्यादा दूर नहीं हैं। ये निराधार लोग हैं। इनकी चिंता किये बिना हमें समाज को साथ रखना चाहिए और समाज के बीच में ही आंदोलन करते हुए जब हम आगे बढ़ेंगे, ये सब लोग हमारे साथ खड़े हुए दिखाई देंगे। ❒

(पृष्ठ ८ 'हिन्दू समाज को कलंकित करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र' का शेष) और मेरे पूरे कार्यकाल में कभी प्रशासन या सी.आई.डी. द्वारा आश्रम के संदर्भ में किसी गैरकानूनी कार्य की शिकायत सामने नहीं आयी। बापू को मैं अपना पिता मानती हूँ। बापू पर आरोप बिल्कुल निराधार हैं और इसकी गारंटी मैं लेती हूँ। बापू की संस्था में कोई रहस्यमय गतिविधि नहीं है। जो है सब खुला है। भजन, कीर्तन, सत्संग होता है, साधना होती है। इनकी स्पष्ट गतिविधियाँ हैं कि वे लोगों की बुराइयाँ छुड़ा रहे हैं, गौ-सेवा आदि में लगे हैं। तो आसारामजी बापू जैसे संत जो इस प्रकार से समाज-हित के कार्यों में लगे हैं, हमें तो इनके सहयोगी बनना चाहिए। ❒

मोदी की 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः'

- सम्पादकीय, 'हिन्दू वॉइस', जनवरी २०१०
(सम्पादक श्री पी. दैवमुत्तु)

क्या भारत में किसी ऐसी घटना के बारे में सोचा भी जा सकता है जिसमें एक मसजिद या गिरजाघर में अवैध हथियार और शस्त्र इकट्ठे करने या राष्ट्र-विरोधियों और अपराधियों को शरण देने की वजह से छापा मारा गया हो ? मैंने तो आज तक नहीं सुना है ।

पुलिस का दावा है कि वर्ष १९९१ से २००६ के बीच केरल के एक चर्च - 'द डिवाइन रिट्रीट सेंटर, तिरुवनन्तपुरम्' में कुल ९७४ रहस्यमय मौतें हुईं, जिनमें ज्यादातर युवतियाँ थीं । लेकिन पुलिस चर्च के भवन के अंदर प्रवेश करने से डरती है। मई २००३ में मराड (केरल) में एक मुसलमान समूह, जो शुक्रवार की नमाज पढ़कर मसजिद से बाहर निकल रहा था, के द्वारा ८ निर्दोष हिन्दू मछुआरों की निर्दयता से हत्या कर दी गयी । तब भी पुलिस मसजिद में नहीं घुसी बल्कि मुस्लिम लीग के ई. अहमद, वर्तमान रेल राज्यमंत्री ने पुलिस को मसजिद में घुसने व छानबीन करने से रोक दिया । ईसाई संगठनों द्वारा चलाये जा रहे अनाथालयों में हत्याएँ व लड़कियों व ननों (ईसाई साध्वियों) के साथ छेड़खानी बहुत ही सामान्य बात है। परंतु पुलिस और मीडियाकर्मियों के साथ अच्छे संबंध होने के कारण प्रेस में विरले ही इनकी सूचना दी जाती है और पुलिस भी इनके विरुद्ध कुछ कार्यवाही करने की हिम्मत नहीं कर पाती ।

लेकिन जब हिन्दू संगठनों की बात आती है तब पुलिस संगठन-परिसर में थोथे आधारों पर भी धावा बोलने व वहाँ रहनेवालों को उत्पीड़ित करने से पहले दो बार भी विचार नहीं करती । वे कभी भी उन संगठनों की प्रतिष्ठा या हिन्दू मनोभावों की परवाह नहीं करते । वे ऐसा या तो उस संगठन के प्रमुख से अपना व्यक्तिगत बदला चुकाने या तो विश्व को अपनी सेक्युलर (धर्मनिरपेक्ष) छवि का प्रमाण देने के उद्देश्य से करते हैं ।

वर्ष २००४ में जयललिता ने इसी प्रकार का निर्दय कृत्य किया जब उन्होंने कांची शंकराचार्य के मठ पर छापा मारकर स्वामी जयेन्द्र सरस्वती व उनके उत्तराधिकारी स्वामी विजयेन्द्र सरस्वती को एक कथित हत्या के मामले में गिरफ्तार करवाया था । परिणाम सभीके सामने है। २००८ के चुनावों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा व मुख्यमंत्री पद से हाथ धोना पड़ा ।

हिन्दू साधुओं व संतों को परेशान करना व उनकी खिल्ली उड़ाना यह अनेक सेक्युलर राजनेताओं का शौक हो गया है । आज इस 'स्वाइन फ्लू' ने प्रभाव डाला है तथाकथित हिन्दुत्व के पक्षधर नरेन्द्र मोदी पर भी, जिनकी सरकार ने २७ नवम्बर २००९ को संत आसारामजी बापू के साबरमती आश्रम पर धावा बोलकर आश्रमवासियों को निर्दयतापूर्वक मारना शुरू कर दिया । खुद संत आसारामजी बापू को भी दो अन्य लोगों के साथ हत्या के प्रयास के मामले में फँसाया गया है । (विस्तृत जानकारी हेतु पढ़िये 'हिन्दू वॉइस' पत्रिका, जनवरी २०१० के अंक के पृष्ठ ५ से ८)

जयललिता ने कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि एक ७२ वर्षीय शंकराचार्य, जो एक २५०० वर्ष पुराने प्रतिष्ठित संगठन का नेतृत्व सँभालते हैं, वे कभी किसीकी हत्या करने का सोच भी कैसे सकते हैं ! उसी प्रकार गुजरात के तथाकथित कुशल सी.ई.ओ. नरेन्द्र मोदी ने भी तनिक भी विचार नहीं किया कि एक संत जिनके विश्व भर में करोड़ों अनुयायी हैं, वे ऐसा घृणित अपराध करने का सोचेंगे भी कैसे ! दोनों ही मामलों

में ऐसा लगता है कि सत्ता व घमण्ड ने उन्हें अंधा कर दिया है, जिसकी वजह से वे ऐसे न्यायविरुद्ध अलोकतांत्रिक और सिद्धांतहीन कार्य कर रहे हैं।

हम सभी (मेरे समेत) अब तक नरेन्द्र मोदी के प्रति बड़ा आदरभाव रखते थे। मैंने कितनी ही बार उन्हें आधुनिक सरदार पटेल (भारत के लौहपुरुष) की तरह भी वर्णित किया है और प्रधानमंत्री बनने की योग्यता रखनेवाला भी कहा है। लेकिन उन्होंने हिन्दुओं को धोखा दिया है और अब वे एक आदरणीय हिन्दू संत को प्रताड़ित करके 'सेक्युलर' बनने का प्रयास कर रहे हैं।

अगर हम पीछे मुड़कर देखें तो हमें स्पष्ट होगा कि नरेन्द्र मोदी कभी भी हिन्दुत्ववादी नेता नहीं रहे हैं। सच तो यह है कि हम एक भ्रम में जी रहे थे। नरेन्द्र मोदी अपने विश्वसनीय मार्गदर्शक का अनुकरण कर हिन्दुओं को धोखा दे रहे हैं।

हमें कुछ समय पहले ही हिन्दुओं के भविष्य के बारे में हलका संदेह था। 'हिन्दू वॉइस' के फरवरी २००८ के अंक में मेरे द्वारा लिखे गये सम्पादकीय का शीर्षक था - ''क्या भाजपा पुनः धोखा देगी ?'' यह चेन्नई में हिन्दुओं के द्वारा मोदी के जयललिता के पास मिलने जाने के विरोध के संदर्भ में कहा गया था। उन्होंने घेरे गये कांची मठ को देखने जाने की आवश्यकता महसूस नहीं की। उन्हें आसुरी जयललिता के साथ रहना अधिक रास आया, उसके कई प्रकार के व्यंजनोंवाले भोज का अधिक आनंद आया (तमिलनाडु विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए)। तो भाजपा व नरेन्द्र मोदी के लिए भी चुनाव जीतना एक हिन्दू संगठन को बचाने से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

मोदी महोदय ने फिर से अपनी सेक्युलर छवि को प्रमाणित तब किया जब उन्होंने अहमदाबाद व गांधीनगर के सैकड़ों मंदिरों को सड़कें चौड़ी करने के नाम पर ढहाने का आदेश दिया था। अंततः श्री अशोक सिंघलजी को हस्तक्षेप करना पड़ा।

और अब मोदी ने किया संत आसारामजी बापू के साबरमती आश्रम पर बिना किसी ठोस आधार के हमला ! ऐसा प्रतीत होता है कि मोदी ने आश्रम को ढहाने की ठान ली है, परिणाम चाहे कुछ भी हों। इसका कारण यह हो सकता है कि संत आसारामजी बापू का 'विश्व हिन्दू परिषद' से नजदीकी संबंध हो गया है। जैसा कि सभीको ज्ञात है कि डॉ. प्रवीण तोगड़िया मोदी के कट्टर दुश्मन हैं और मोदी वि.हि.प. को गुजरात से हटा देना चाहते हैं। अशोक सिंघलजी संत आसारामजी बापू के खिलाफ की गयी कार्यवाही के विषय में मोदी से चर्चा करना चाहते थे तो उसके लिए भी मोदी ने उन्हें मना कर दिया। ऐसे व्यक्ति को कभी भी एक हिन्दुत्ववादी नेता नहीं समझा जा सकता।

मुसलमानों व ईसाइयों का हिन्दुओं को निशाना बनाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। उनका धर्म उन्हें ऐसा करने की आज्ञा देता है और हम इसके लिए तैयार भी हैं। लेकिन यहाँ एक हिन्दू मुख्यमंत्री, जो हिन्दू मतों से सत्ता में आये, एक हिन्दू संगठन को ध्वस्त करने का प्रयास कर रहे हैं - यह विश्वासघात है और खतरनाक लक्षणों से भरा है। यह **'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः'** है। जयललिता का जो हाल हुआ निश्चित ही मोदी के साथ भी वही होगा। परंतु सभी हिन्दू संगठनों को अपने-आपको व सनातन हिन्दू धर्म को ऐसे नकली हिन्दुत्ववादी नेताओं से बचाने के लिए एकजुट हो जाना चाहिए।

मोदी अभी इतनी देर होने के बाद भी हिन्दुओं का विश्वास जीत सकते हैं, यदि अपने किये की क्षतिपूर्ति कर दें तो। इसके लिए उन्हें शीघ्रता से संत आसारामजी बापू से क्षमा माँगनी चाहिए, वि.हि.प. को अपना लेना चाहिए और आश्रम में गुण्डागर्दी पर उतरनेवाले पुलिस अधिकारी को इस कृत्य के लिए निलम्बित कर देना चाहिए। वरना तो वे अपनी ही कब्र खोद रहे होंगे और इस बार हिन्दू भी मुसलमानों व ईसाइयों के साथ उनकी सरकार को डुबाने में शामिल हो जायेंगे। ❐

दुर्गुण व दुराचार से रोगोत्पत्ति

असत्य, क्रोध, ईर्ष्या, दंभ, हिंसा, कपट, निंदा आदि दुर्गुणों व दुराचार का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

असत्य बोलने से तेज व जीवनशक्ति का ह्रास होता है। असत्य बोलते समय हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, मस्तिष्क पर विशेष दबाव पड़ता है। इससे हृदय व ज्ञानतंतु दुर्बल हो जाते हैं। झूठ बोलनेवाले व्यक्तियों को हृदयविकार, पक्षाघात (लकवा), पागलपन होने की सम्भावना अधिक होती है।

क्रोध करने में मस्तिष्क को अपनी बहुमूल्य ओजःशक्ति का उपयोग करना पड़ता है। क्रुद्ध मस्तिष्क को अधिक मात्रा में रक्त की आवश्यकता होती है। अधिक रक्त मस्तिष्क की ओर प्रवाहित होने से मुख व आँखें लाल हो जाती हैं। जिस प्रकार विद्युत का अत्यधिक प्रवाह बल्ब को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार क्रोध मस्तिष्क के ज्ञानतंतुओं को क्षीण कर देता है। क्रोधी व्यक्तियों को हृदय व मस्तिष्क के विकार होने की सम्भावना अधिक होती है।

ईर्ष्या से पित्त प्रकुपित हो जाता है, शरीर व मन में तपन होती है।

दंभ से कफ का प्रकोप होता है। शरीर में भारीपन, बुद्धि में जड़ता व इन्द्रियों की कार्यक्षमता में न्यूनता आती है।

हिंसा से त्रिदोष प्रकुपित हो जाते हैं।

निंदा करने से शरीर में 'न्यूरोपेप्टाइड्स' नामक द्रव्य प्रवाहित होते हैं और उनसे कोलेस्ट्रॉल बनता है, जो उच्च रक्तचाप या हृदयाघात की वजह बनता है।

कपट का शरीर पर परिणाम धीरे-धीरे असर करनेवाले विष के समान है। इसी प्रकार मद, मोह, मत्सर, लोभ, अहंकार आदि दुर्गुण भी आयु, बल, तेज का नाश करनेवाले हैं।

जैसे गन्ने से रस निकाल लेने पर वह निस्सार हो जाता है, उसी प्रकार सद्गुण, सदाचार, सद्विचाररहित जीवन दुःख, रोग व शोकमय हो जाता है।

निरामय जीवन का रहस्य

'रोगनिवृत्ति का उपाय क्या है?' शिष्य अग्निवेश के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए अत्रि मुनि ने कहा :

* जब शरीर और मन का संबंध छूट जाता है, तब वेदना के आश्रयभूत शरीर और मन के अभाव में रोग का अभाव हो जाता है।

* दैव (पूर्वकाल के कर्म) और पौरुष (वर्तमान कर्म) की विषमता रोगों की प्रवृत्ति व समता रोगों की निवृत्ति का कारण है।

* हितकर आहार व विहार का सेवन करनेवाला, विचारपूर्वक कार्य करनेवाला, शब्द-स्पर्शादि विषयों में आसक्त न होनेवाला, दानशील, सुख-दुःख में सम रहनेवाला, सत्य बोलने में तत्पर, सहनशील तथा आप्तसेवी (समझदार बुजुर्गों के वचनों के प्रति श्रद्धा रखकर तदनुसार आचरण करनेवाला) व्यक्ति नीरोग रहता है।

* जिनके पास सुख देनेवाली मति, सुखदायक कर्म व वचन, स्वाधीन मन एवं पापरहित शुद्ध बुद्धि है तथा जो तपस्या, ज्ञानप्राप्ति व योगसिद्धि (आत्मा-परमात्मा के योग) में तत्पर हैं, उन्हें शारीरिक व मानसिक कोई भी रोग नहीं होता और तीव्र प्रारब्ध से हो भी जाय तो उन पर उसका असर नहीं पड़ता।

अतः सुखी व निरामय जीवन की कामना करनेवाले व्यक्ति को धर्म के अनुसार आचरण करना चाहिए।

सुखं च न विना धर्मात् तस्माद्धर्मपरो भव। ❑

आश्रम की जमीनों के बारे में लगाये गये आरोपों का भंडाफोड़

एकतरफा झूठी बातें प्रचारित करके पूज्य बापूजी की उज्ज्वल छवि को धूमिल करने के घृणित प्रयासों की शृंखला में कुछ दिनों से यह विवाद उत्पन्न किया गया कि अहमदाबाद आश्रम के नदी-तट की ५१,१०१ चौ. मीटर जमीन पर संस्था ने अतिक्रमण किया है । सच्चाई यह है कि नदी-किनारे की जमीन पहले भी खुली पड़ी थी और अभी भी खुली है । वर्ष में केवल दो-तीन बड़े सत्संग-कार्यक्रमों में तीन-चार दिन देश-विदेश से आनेवाली आम जनता के मात्र सत्संग-श्रवण हेतु बैठने के लिए उसका उपयोग किया जाता है, जैसे गुजरात सरकार द्वारा नदी-तट पर पतंग महोत्सव का आयोजन होता है, गिरनार में भी परिक्रमा करते हैं व मेले का आयोजन होता है । इसमें अतिक्रमण का कोई प्रश्न ही नहीं है ।

इसके अलावा सर्वे नं. २८२-अ में जिस १५,४५१ चौ. मीटर जमीन के बारे में विवाद खड़ा किया गया है, उस जमीन पर भी संस्था के द्वारा कोई अतिक्रमण या निर्माणकार्य नहीं किया गया है, बल्कि संस्था के द्वारा शैक्षणिक कार्यों के लिए सन् २००७ में इस भूमि की शासन से माँग भी की गयी थी और यह मूलभूत शर्त होती है कि जमीन खुली हो तभी आप माँग कर सकते हो । शासन की ओर से पहले भी कई बार पटवारी के द्वारा जाँच की गयी और संबंधित फाइल में यह उल्लिखित है कि उक्त स्थान पर जमीन बिल्कुल खुली है, फिर भी अतिक्रमण है ऐसा उछाला जा रहा है यह कितना हास्यास्पद है ! उल्लेखनीय है कि उक्त जमीन का उपयोग भी मात्र दो-तीन बड़े सत्संग-कार्यक्रमों में तीन-चार दिन आम जनता के भोजन हेतु पंडाल लगाने में किया जाता है । यहाँ किसी प्रकार का कोई भी पक्का निर्माणकार्य नहीं किया गया है ।

इसके अलावा आश्रम से कुछ दूरी पर सर्वे नं. २८२-अ में ही आश्रम न्यास को पन्द्रह वर्ष के लिए वनीकरण हेतु १० एकड़ जमीन भाड़ेपट्टे पर दी गयी थी । उस स्थान पर १० एकड़ के बजाय ६.५ एकड़ जमीन ही उपलब्ध थी और बाकी की जमीन के लिए शासन ने अपने आदेश में स्पष्ट लिखा है कि जमीन कम पड़े तो आश्रम से सटी हुई जमीन दी जायेगी । उसी क्रम में आश्रम के पास की खाई-खड्डोंवाली जमीन का क्षरण रोकने के लिए वृक्षारोपण किया गया है और शासन व जिलाधीश के उस समय के आदेश के बावजूद आज भी संस्था को ३.५ एकड़ जमीन कम मिली है, जबकि कुप्रचार यह किया जा रहा है कि संस्था ने भूमि पर अतिक्रमण किया है ।

जिस तरह से मीडिया में कुप्रचार हो रहा था कि आश्रम में बुल्डोजर आयेगा और निर्माण तोड़ दिया जायेगा, वह सब कपोलकल्पित व लोगों के मन में आश्रम की स्वच्छ छवि के प्रति संदेह एवं भ्रम उत्पन्न करने का प्रयास था । सम्पूर्ण भूमि जिस पर आश्रम स्थित है वह आश्रम की मालिकी की ही है और इसमें कहीं भी किसी भी प्रकार का कोई अतिक्रमण नहीं है तथा समस्त निर्माण आश्रम की अधिकृत मालिकी की भूमि पर ही है ।

सारांश में, जो जमीन पहले भी खुली थी और आज भी खुली है, उसे व्यर्थ में ही कानूनी प्रक्रिया से गुजारकर और शोर-शराबा करके शासन, प्रशासन और मीडिया क्या सिद्ध करना चाहते हैं, यह पाठकगण अब स्वयं ही समझ जायें ।

इसी प्रकार पेठमाला व गांभोई (जि. साबरकांठा, गुजरात) आश्रमों के बारे में आरोप लगाये जा रहे हैं कि वहाँ पर गैरकानूनी ढंग से जमीन हथियाई गयी है । यह झूठा आवेदन करनेवाला विघ्नसंतोषी था रमेश चौकसी, जो एक नम्बर का ब्लैकमेलर शख्स है । इस आवेदन में दिये गये तर्कों से भ्रमित होकर तहसीलदार ने उस जमीन को शासन को लौटाने का आदेश दिया । उसके विरुद्ध अपील की गयी और दस्तावेजी सबूत प्रस्तुत किये गये, जिसके आधार पर अभी कुछ दिन पहले ही डेप्युटी कलेक्टर ने तहसीलदार के आदेश को निरस्त किया है ।

संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा किये जा रहे आदिवासी-उत्थान के दैवी कार्यों की शृंखला में आदिवासी क्षेत्र भैरवी, जि. नवसारी (गुज.) में छात्रों के लिए छात्रालय एवं योग-प्रशिक्षण, गरीबों के लिए चिकित्सा-सेवा, व्यसनमुक्ति अभियान, गरीबों-अनाथों-विधवाओं में अनाज, भोजन-प्रसाद व जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण आदि विभिन्न सेवाकार्य किये जाते हैं। इन आदिवासी सेवाकार्यों के लिए संस्था द्वारा सन् १९९३ में वहाँ आश्रम की स्थापना की गयी थी।

जिस जमीन पर संस्था १९९३ से सत्प्रवृत्ति करती आ रही है, वह जमीन संस्था ने शासन से खरीदी थी तथा उसके मध्य में तथाकथित विवादित जमीन स्थित है। संस्था को जमीन का कब्जा सौंपते समय प्रशासन ने जमीन में निर्माणकार्य दर्शाते हुए जो नक्शा बताया था, उसमें सत्संग-भवन आदि आश्रम को आबंटित भूमि पर ही बताया गया था, जिसमें तहसीलदार एवं सर्कल ऑफिसर के हस्ताक्षर भी हैं और अब संस्था को ग्राम पंचायत द्वारा जो अवैधानिक नोटिस दिया गया है, उसमें यह दर्शाया गया है कि सत्संग-भवन आदि आश्रम को आबंटित जमीन पर नहीं हैं बल्कि आश्रम के पास लगे हुए दूसरे सर्वे नम्बर में हैं, अतः उसे दो दिन में तोड़ दिया जाय। यह नोटिस ग्राम पंचायत ने किसी व्यक्ति-विशेष के दबाव में आकर दिया है, जो गुजरात राज्य पंचायत अधिनियम के प्रावधानों के विरुद्ध है। इसके खिलाफ आश्रम ने ग्राम पंचायत को प्रत्युत्तर भी दिया है तथा न्यायालय में भी याचिका दायर की है।

उक्त भूमि पर 'एडवर्स पजेशन' के सिद्धांत से भी संस्था का कानूनी हक बनता है। अतः इस जमीन के आबंटन हेतु शासन को आवेदन भी दिया गया है, जिस पर शासन में कार्यवाही चालू है। इस प्रकार से भी यह भूमि खाली कराने का ग्राम पंचायत का नोटिस अवैधानिक है। इंन तमाम तथ्यों के बावजूद भी संस्था शांतिपूर्ण एवं न्यायपूर्ण हल के लिए ग्राम पंचायत, भैरवी के साथ वार्ता भी आयोजित कर रही है, ताकि गलतफहमियों को दूर किया जा सके।

भैरवी आश्रम पिछले १७ वर्षों से निष्काम भाव से आदिवासी-उत्थान के लिए अनेकविध सेवाकार्य कर रहा है। जनसाधारण का यही मानना है कि आश्रम की स्थापना के बाद लोगों के जीवन में काफी रचनात्मक परिवर्तन आया है। आश्रम को अचानक इस तरह का नोटिस दिया जाने से ग्रामवासियों में आश्चर्य व रोष की भावना है। **– श्री अजयभाई शाह** □

(पृष्ठ १७ 'उत्तम-में-उत्तम सेवक हैं भगवान !' का शेष)
कैसा-कैसा सत्संग दिया, कैसा-कैसा मौका दिया, कैसे भी करके हमको यहाँ तक पहुँचाया कि हम भगवान से दादागिरी भी कर सकते हैं ! दादागिरी की लाज रखनेवाला तू कैसा है ! तेरी कैसी करुणा है !! कैसी कृपा है !!!

भगवान सेवक भी हैं, सखा भी हैं, नियंता भी हैं, समर्थ भी हैं और असमर्थ भी हैं। **अहं भक्तपराधीनः ...** 'मैं भक्तों के अधीन हूँ।' ऐसा कहनेवाला भगवान विश्व के किसी मजहब में हमने नहीं देखा, नहीं सुना। भगवान ने अर्जुन को कहा :

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

'सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य-कर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से (कर्तृत्वभाव से) मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।' (गीता : १८.६६)

जिम्मेदारी भी उठायी। ये कैसे हैं भगवान कि अपने सिर पर जिम्मेदारी भी ले लेते हैं !

भक्त मेरे मुकुटमणि, मैं भक्तन को दास।

शबरी के जूठे बेर खाने में संकोच नहीं ! द्रौपदी की जूतियाँ अपने दुशाले में उठायीं, पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में जूठी पत्तलें उठायीं, भक्त प्रह्लाद की सेवा की - अनेक विघ्नों में उसकी रक्षा की और भी अनेकों नामी-अनामी भक्तों के, संतों के जीवन में भगवान की सेवा का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। हमारे-आपके जीवन में भी जो कुछ सुख, शांति, माधुर्य, औदार्य है वह उस दयालु प्रभु की ही सेवा का प्रभाव है। उत्तम-में-उत्तम सेवक हैं भगवान ! □

संस्था समाचार

— ('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि) —

सारी अनिश्चितताओं को पूर्णविराम देते हुए पूज्य बापूजी पूनम-दर्शन कार्यक्रम हेतु **१ दिसम्बर** को **अहमदाबाद** पहुँचे तो हर बार से भी ज्यादा साधक-भक्त पूज्यश्री के दर्शनार्थ एकत्रित हुए थे। आश्रमवासियों पर हुए अत्याचारों की गहरी वेदना सबके हृदय में थी। जब भक्तों की यह स्थिति थी तो हजारों माताओं का हृदय धारण करनेवाले सद्गुरु के हृदय में कैसी पीड़ा, करुणा होगी यह तो वे ही जानें ! शायद यही गहरी संवेदना मौन के रूप में अभिव्यक्त हुई और पूज्यश्री का यह पूनम-दर्शन एक अनोखी गम्भीरता, शांति की झलक देते हुए सम्पन्न हुआ।

२ से ४ दिसम्बर तक रोहिणी-दिल्ली में पूनम-दर्शन व सत्संग-कार्यक्रम में विशाल जनसमुदाय उमड़ा। यहाँ सत्संग की अनोखी महिमा का वर्णन करते हुए पूज्यश्री बोले : ''कर्म बाद में फल देता है। अभी तुम कर्म करो, पैसे कमाओ, चीज लाओ तब मजा आयेगा। उपासना का फल स्वर्ग आदि में मिलेगा। यज्ञ में अभी अग्नि सहो, फल बाद में मिलेगा लेकिन सत्संग का फल अभी शुरू हो जाता है और बाद में पूर्णता देता है। सत्संग का फल तुरंत मिलता है। अभी-अभी हम दुःखरहित, चिंतारहित, गपशपरहित, चुगलीरहित होके घंटा भर शांति और आनंद से सत्संग-श्रवण करते रहे, यह क्या कम सफलता है !''

इस सत्संग-कार्यक्रम के बाद सारी व्यस्तताओं को विराम देते हुए पूज्यश्री एकांत में अपनी अवधूती मस्ती में रहे। इसी अवधूती मस्ती की छटा बिखेरते हुए कभी-कभी पूज्यश्री के सत्संगों का लाभ फोन लाइन और इंटरनेट के माध्यम से लाखों लोगों को मिलता रहा। कभी तत्त्वज्ञान की ऊँचाइयाँ, कभी भक्ति की रसमयता तो कभी कर्म को कर्मयोग में बदलने की युक्तियाँ आदि विविध छटाओं से ओतप्रोत सत्संग-धारा साधकों के जीवन को भगवद्रस से रसमय करती रही।

पूज्यश्री बोले : ''अगर मर्यादा का आश्रय लेकर स्वधर्म-पालन करेंगे, कष्ट-सहिष्णुता होगी और भगवान की संतुष्टि का भाव होगा तो आपका तो मंगल हो जायेगा, आपके नाम से भी लोगों का मंगल हो जायेगा। शबरी का तो मंगल हुआ, शबरी के नाम से भी लोगों का मंगल हो रहा है। रविदासजी का तो मंगल हुआ, उनके सम्पर्क में आयी मीरा का भी मंगल हुआ और मीरा के पद व सत्संगों से कइयों का मंगल हो रहा है। और भी न जाने कितने नाम इतिहास में भरे पड़े हैं ! जो कष्ट सहकर भी अपने धर्म का, कर्तव्य का पालन करते हैं वे धन्य हैं !''

२५ से २७ दिसम्बर तक सूरत में ध्यानयोग साधना शिविर सम्पन्न हुआ। पिछले कुछ दिनों से पूज्य बापूजी पर अनर्गल आरोपों, आक्षेपों की बौछार करने में कुप्रचारवालों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी, पर इससे न तो पूज्यश्री के श्रद्धालुओं की श्रद्धा डिगी और न ही उत्साह। इसका जीता-जागता प्रमाण रहा सूरत का यह शिविर, जिसमें लाखों-लाखों की संख्या में उमड़े भक्त-समूह की उपस्थिति से लगा करारा थप्पड़ इन कुप्रचारकों का मनोबल क्षत-विक्षत करने के लिए मानो पर्याप्त था।

ईश्वरीय संविधान के प्रति आस्था ही समाज को स्वस्थ और संस्कारी बना सकती है। इस बात पर जोर देते हुए बापूजी बोले : ''ईश्वरीय सिद्धांत से सामाजिक व्यवस्था भी अच्छी होती है और ईश्वरप्राप्ति भी होती है। जो ईश्वरीय संविधान की अवहेलना करते हैं अर्थात् जो धर्म को नहीं मानते, वे मुक्ति के रास्ते, ईश्वरीय कृपा के रास्ते, ईश्वरीय प्रसाद के रास्ते से तो च्युत हो ही जाते हैं लेकिन समाज में भी उन्हें शांति नहीं मिलती। फिर हाय ! पान-मसाला तू सुख दे, हाय ! शराब तू सुख दे... कुछ-न-कुछ, क्या-क्या करके भी बेचारे सुख के लिए व्यसनी होते-होते नीच योनियों को जाने के संस्कार बना देते हैं।''

२९ दिसम्बर को **मोलेथा आश्रम (गुज.)** में मोलेथा, सरदार सरोवर, भरुच आदि चारों तरफ से आये भक्तों को पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग अनायास ही प्राप्त हुए। यहाँ के भक्तों से रू-बरू होते हुए यह रोचक तथ्य सामने आया कि चाहे बुद्धिजीवी वर्ग हो या गाँव के भोले-भाले श्रमजीवी, चाहे समाज का कोई और वर्ग हो, पूज्यश्री के खिलाफ हो रहे कुप्रचार की वजह से सभीके दिलों में पूज्यश्री के प्रति सहानुभूति, आस्था, आदर और सौहार्द के भाव गहराये हैं। साजिशकर्ता और विरोधक भले अपनी शेखी बघारते हों लेकिन आम जनमानस में वे निंदा के, घृणा के पात्र बन चुके हैं और बापूजी के प्रति भले कितना ही जहर उगला जा रहा हो पर बापूजी और उनकी संस्था के प्रति आम जनता में सहानुभूति और सौहार्द बढ़ता जा रहा है।

३० व ३१ दिसम्बर को अहमदाबाद आश्रम में पूनम-दर्शन व सत्संग का लाभ जनता को मिला। भासमान सुख सुख नहीं है और भासमान दुःख दुःख नहीं है, यह जीवन का दार्शनिक रहस्य समझाते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''जो कष्ट देके सुखी होना चाहता है वह भविष्य में बड़ा दुःख बुलाता है। जो कष्ट सहके दूसरों का दुःख हरता है वह भविष्य में तो क्या वर्तमान में ही आनंदस्वरूप ईश्वर का प्रसाद पाता है।''

३१ दिसम्बर व १ जनवरी को फरीदाबाद (हरि.) के दशहरा मैदान को विशाल जनसागर में तबदील कर दिया पूनम-व्रतधारियों और फरीदाबाद व आसपास से उमड़े जनसमुदाय ने। सुख के लिए चल रही आपाधापी, भागदौड़ के मूल में ही भूल दिखाते हुए बापूजी ने कहा : ''जीवन में पैसों की कमी नहीं है, सबको साधनों की कमी नहीं है, मेहनत की भी कमी नहीं है, पुरुषार्थ की भी कमी नहीं है लेकिन किसलिए पुरुषार्थ करना चाहिए इस समझ की कमी है; किधर का पुरुषार्थ करना चाहिए, कहाँ पुरुषार्थ करना चाहिए इस समझ की कमी है। चाहते सभी सुख हैं, दुःख से बचना और सुख में सदा रहना सभी चाहते हैं लेकिन 'पैसा मिले तो सुखी होऊँ, पत्नी मिले तो सुखी होऊँ, यह हटे तो सुखी होऊँ, यह पाऊँ तो सुखी होऊँ...' - इस गलत उद्देश्य को लेकर पुरुषार्थ करने से दुःख मिटता नहीं और सुख टिकता नहीं। अगर सही पुरुषार्थ करें तो सुख मिटेगा नहीं और दुःख टिकेगा नहीं।

इस बार पूज्यश्री के एकांतवास के दौरान सत्संग-सान्निध्य का लाभ मिला फरीदाबादवासियों को। बापूजी के तीन दिन के इस वास्तव्य में तीनों दिन श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहा। **'एकै साधे सब सधै'** के सिद्धांत को अपने खास अंदाज में समझाते हुए बापूजी बोले : ''कई अफसर नौकर बड़े नेताओं से मेल-मिलाप रखते हैं तो उन्हें फायदा मिलता है लेकिन भगवान से मेल-मिलाप रखें तो ईश्वरीय सुख, भगवदीय स्वभाव का फायदा तो मिलता ही है, प्रकृति भी अनुकूल हो जाती है। कितने-कितने नेताओं, अफसरों और रिश्तेदारों को रिझाने के बावजूद भी बेचारे पूर्णता से वंचित रहते हैं, क्योंकि जो अपूर्ण में बड़े बनकर बैठे हैं उनको रिझाया। लेकिन जो पूर्ण है उसमें तुम चले जाओ, उस एक को रिझा लो तो सब तुम्हें रिझाने के लिए तुम्हारे पीछे-पीछे घूमेंगे।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

उस एक आत्मदेव को रिझा लो, उस एक आत्मदेव का चिंतन, उस एक आत्मदेव का ज्ञान, उस एक आत्मदेव की प्रीति, उस एक आत्मदेव की प्राप्ति का उद्देश्य बनाओ तो प्रकृति, देवता, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, दिशाएँ, वायु, जल, अग्नि सब अनुकूल हो जायेंगे क्योंकि सब भगवान के उपजाये हुए हैं। अतः भगवान के स्वरूप का ज्ञान, प्रीति और उसीमें संतुष्टि, इसीसे इहलोक और परलोक सँवर जायेगा।'' ❒

पिछले अंक में प्रकाशित पहेलियों के उत्तर :
(१) मेंढक (२) फुहारा (३) कुर्सी (४) वायु

आश्रम संचालित विभिन्न सेवाकार्य
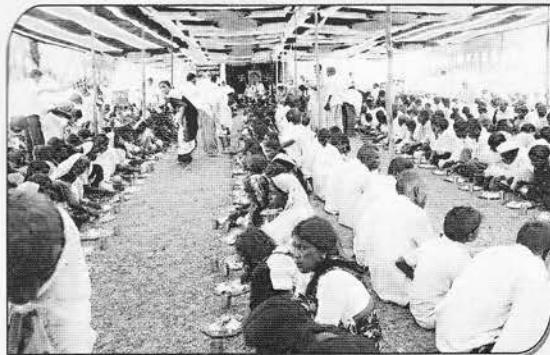
गडचिरोली (महा.) तथा बड़गाँव (महा.) में विशाल भंडारों का आयोजन।
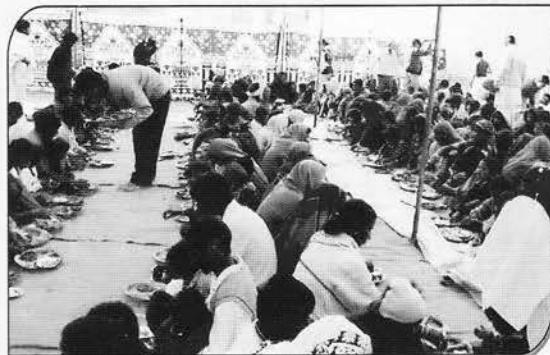
भिवाड़ी (राज.) में गरीबों हेतु भंडारा तथा आरा, जि. भोजपुर (बिहार) में वस्त्र-वितरण।
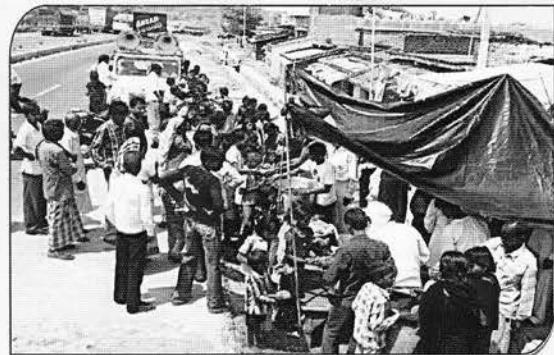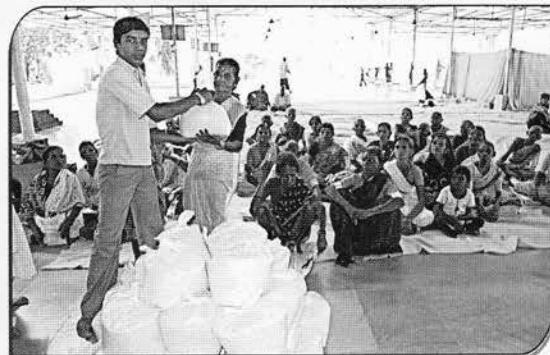
बोईसर (महा.) में अनाज-वितरण तथा कुलगो (झारखण्ड) में अल्पाहार वितरण।
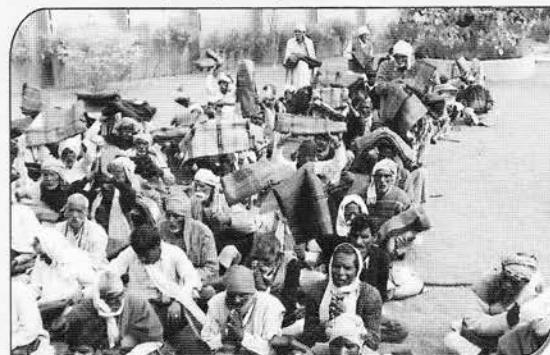
बरेली (उ.प्र.) तथा सरमथुरा (राज.) में कम्बल आदि का वितरण।

'इंटरनेशनल स्पिरिच्युअल ऑर्गनाइजेशन' द्वारा जंतर-मंतर (दिल्ली) पर आयोजित धरने में विभिन्न राष्ट्रीय संगठनों एवं धर्म-संप्रदायों के अगुआओं ने पूज्य बापूजी एवं आश्रम पर लगाये जा रहे घृणित आरोपों एवं अनर्गल कुप्रचार का एकजुट होकर विरोध किया।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-21/NW/2010
'D' No. MR/TECH/47.4/2010

ओमप्रकाश सिंघल

सुश्री उमा भारती

मुस्लिम समुदाय के अगुआ

मतीन अहमद (MLA)

साहिब सिंह चौहान (MLA)

धरना-स्थल पर उपस्थित जनसमुदाय

पूज्य बापूजी पर लगाये जा रहे झूठे आरोपों एवं अपमानजनक कुप्रचार का निषेध करने हेतु जालंधर (पंजाब) में 'षट् दर्शन संत समाज' द्वारा निकाली गयी विशाल जन-जागृति यात्रा